नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 394, नई दिल्ली, शुक्रवार 03 अप्रैल 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

समर्थन और सम्मान कभी भी मांगकर नहीं, बल्कि अपने कर्मों और व्यवहार से कमाया जाता है।

02 चेहरा धोने के नियम , सलाह और सावधानियां ----शहनाज़ हुसैन

06 अधिकार बनाम हकीकत: क्या सच में मुफ्त हैं शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय?

08 टेंडर कमीशन के मास्टर पूर्व मंत्री आलमगीर को सुप्रीम कोर्ट ने नहीं दी जमानत

'परिवहन विशेष' का अनूठा सम्मान:

सम्मान की कड़ी में पुन: कर्मयोगियों के द्वार पहुँचे संपादक संजय बाठला, देशसेवा के जज्बे को किया सलाम

चिकित्सा और विदेश सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाली विभूतियों को घर जाकर किया सम्मानित; जारी रहेगा सिलसिला आज आलोक कुमार एवं संध्या बजाज होंगे सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : पत्रकारिता के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों को जीवंत रखते हुए 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र ने एक नई मिसाल पेश की है। समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह के उपरांत, मुख्य संपादक संजय बाठला उन गणमान्य विभूतियों के द्वार जाकर उन्हें सम्मानित कर रहे हैं, जो अपनी व्यस्तता के कारण मुख्य आयोजन में शिरकत नहीं कर पाए थे।

इसी कड़ी में आज मुख्य संपादक संजय बाठला अपनी टीम के साथ विशिष्ट चिकित्सा विशेषज्ञों और सेवानिवृत्त अधिकारियों के निवास पर पहुँचे। उन्होंने ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया से आए डॉ. शक्ति गहलोत और डॉ. ज्योति गहलोत (General Practitioner, Brisbane) को उनकी अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा सेवाओं के लिए सम्मानित किया।

साथ ही, विदेश मंत्रालय से सेवानिवृत्त सहायक अनुभाग अधिकारी (ASO) श्री राजपाल दहिया को भी उनकी दीर्घकालीन राष्ट्रसेवा के लिए सम्मान पत्र भेंट किया गया।

आज इन हस्तियों से होगी भेंट

सम्मान का यह सिलसिला आज 3 अप्रैल को भी जारी रहेगा। संजय बाठला अपनी टीम के साथ निम्नलिखित गणमान्य व्यक्तियों को उनके निवास पर सम्मानित करने जाएंगे:

श्री आलोक कुमार : मुख्य महाप्रबंधक (LPG - सेवानिवृत्त), इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (विपणन प्रभाग), दिल्ली।

संध्या बजाज : अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय (पूर्व चेयरमैम, हरियाणा) एवं सदस्य, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग। आप बच्चों के अधिकारों और मुफ्त कानूनी सहायता के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय हैं।

"सम्मान केवल मंच का मोहताज नहीं होता, वह व्यक्तित्व की गरिमा को पहचानने का नाम है।"
- संजय बाठला

"सम्मान केवल एक मंच या भव्य आयोजन का मोहताज नहीं होता, बल्कि यह उन प्रयासों की स्वीकृति है जो राष्ट्र निर्माण के लिए निस्वार्थ भाव से किए जाते हैं। हमारे ये गणमान्य अतिथि अपनी प्रशासनिक और सामाजिक व्यस्तताओं के कारण मुख्य समारोह में नहीं आ सके, लेकिन उनके द्वारा देशहित में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों का मूल्य कम नहीं हो जाता। 'परिवहन विशेष' परिवार का यह सौभाग्य है कि हमें आज इन कर्मयोगियों के द्वार पर आकर उन्हें सम्मानित करने का अवसर मिला है। राष्ट्र निर्माण में इन अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों का योगदान अतुलनीय है और हमें उम्मीद है कि इनका मार्गदर्शन हमें सदैव मिलता रहेगा।"

श्री राजपाल दहियाविदेश मंत्रालय, एएसओ (ASO), सेवानिवृत्त, सहायक अनुभाग अधिकारी

डॉ. शक्ति गहलोतडॉ. ज्योति गहलोतजनरल प्रैक्टिशनर (सामान्य चिकित्सक), ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया

एलजी ने महिला ट्रैफिक कर्मियों को दीं 38 नई स्कूटी, दिल्ली के भीड़भाड़ वाले इलाके में जाम हटाने में मिलेगी मदद

उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू ने दिल्ली ट्रैफिक मुख्यालय का दौरा किया। उन्होंने 'ट्रैफिक प्रहरियों' को सम्मानित किया और महिला ट्रैफिक कर्मियों के लिए 38 नई स्कूटरों को हरी झंडी दिखाई।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू ने बृहस्पतिवार को टोडापुर स्थित ट्रैफिक मुख्यालय का दौरा किया। दौरे का मुख्य मकसद "ट्रैफिक प्रहरियों" को सम्मानित करना था, जिन्होंने नियमों को सख्ती से लागू करके सड़क अनुशासन को बढ़ावा देने में योगदान दिया था।

पुलिस कमिश्नर सतीश गोलछा व विशेष आयुक्त (ट्रैफिक मैनेजमेंट डिवीज़न) नीरज ठाकुर समेत ट्रैफिक यूनिट के अन्य अधिकारियों ने उपराज्यपाल को "गार्ड आफ आनर" के बाद ट्रैफिक पुलिस से जुड़े सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले प्रहरियों को सम्मानित किया।

इस अवसर पर महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मियों के लिए 38 नई स्कूटी के बेड़े को उपराज्यपाल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इन स्कूटी का उद्देश्य भीड़भाड़ वाले इलाकों में ट्रैफिक जाम हटाने के लिए त्वरित प्रतिक्रिया क्षमता को बढ़ाना और सड़कों पर प्रभावी उपस्थिति के माध्यम से त्वरित कार्रवाई करना है। यह पहल महिला अधिकारियों को उनके दैनिक कर्तव्यों में काफी सहायता प्रदान करेगी, उनकी परिचालन क्षमताओं को मजबूत करेगी और फील्ड ड्यूटी में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देगी।

2024 में हुई थी ट्रैफिक प्रहरी प्रोत्साहन योजना की घोषणा

एडिशनल पुलिस कमिश्नर विजयंता गोयल आर्या का कहना है कि "ट्रैफिक प्रहरी" प्रोत्साहन योजना की घोषणा सितंबर 2024 में तत्कालीन उपराज्यपाल वीके सक्सेना द्वारा की गई थी। इस योजना के तहत नागरिक "ट्रैफिक प्रहरी एप" (जो प्ले स्टोर पर उपलब्ध है) के माध्यम से ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करवा सकते हैं।

प्रदर्शन के आधार पर विजेता को मिलेगा पुरस्कार

महीने भर के प्रदर्शन के आधार पर, पहले विजेता को 50,000 रुपये, दूसरे विजेता को 25,000 रुपये, तीसरे विजेता को 15,000 रुपये और चौथे विजेता को 10,000 रुपये का पुरस्कार दिया जाता है। उपराज्यपाल ने मार्च 2025 से फरवरी 2026 की अवधि के लिए नागरिकों को पुरस्कार प्रदान किए। "ट्रैफिक प्रहरी एप" का उपयोग करके प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए ऐसे 21 व्यक्तियों को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर सड़क पर उत्पन्न होने वाले संकटों के प्रबंधन में ट्रैफिक कर्मियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, दो नए "आपदा प्रतिक्रिया वाहन" को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। ये वाहन स्टील कटर, ट्री कटर, फ्लोटिंग वाटर पंप, जनरेटर, टावर लाइट जैसी क्षमताओं और उपकरणों से लैस हैं। दौरे के दौरान उपराज्यपाल को ट्रैफिक यूनिट के समग्र कामकाज के बारे में जानकारी दी गई, जिसमें नियमों के विनियमन और उल्लंघन पर कार्रवाई से जुड़े पहलू शामिल थे। उन्होंने ट्रैफिक मुख्यालय में "प्रवर्तन इकाई" और "जन संपर्क इकाई" का भी जायजा लिया।

इस अवसर पर संयुक्त आयुक्त संजय कुमार त्यागी व एडिशनल पुलिस कमिश्नर डीके गुप्ता ने उन्हें वर्तमान प्रणाली के ठोस परिणामों और प्रभावशीलता के साथ-साथ राजधानी की सड़क व्यवस्था के प्रबंधन हेतु भावी योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : भारत ने 2024 में अकेले 'डिजिटल अरेस्ट' (Digital Arrest) के मामलों में लगभग ₹2,000 करोड़ गंवा दिए

काफी शोर-शराबे के बावजूद, भारत ने 2024 में अकेले 'डिजिटल अरेस्ट' (Digital Arrest) के मामलों में लगभग ₹2,000 करोड़ गंवा दिए। आज हमारी साइबर सुरक्षा विचार श्रृंखला में, हम चर्चा करेंगे कि डिजिटल मंत्र ₹डिस्कनेक्ट – वेरिफाई – रिपोर्ट₹ (काटें - जांचें - रिपोर्ट करें) काम क्यों नहीं कर रहा है, और क्यों लोग इस हॉलीवुड शैली के घोटाले में नकली पुलिस और नकली जजों के जाल में लगातार फंस रहे हैं।

एकमात्र सुरक्षा कवच

डिजिटल अरेस्ट घोटाले का शिकार होने से बचने का सबसे प्रभावी तरीका यह है कि किसी भी कानून प्रवर्तन या न्यायिक संचार (Communication) को स्वीकार करने से पहले तुरंत आधिकारिक सरकारी चैनलों के माध्यम से उसकी पुष्टि करें। धोखेबाज पूरी तरह से डर और अलगाव (Isolation) पर भरोसा करते हैं—अपने स्थानीय पुलिस स्टेशन या साइबर अपराध हेल्पलाइन से संपर्क करके उस चक्र को तोड़ने से उनकी शक्ति तुरंत खत्म हो जाती है।

लोग वेरिफिकेशन (जांच) क्यों नहीं करते?

* तर्क पर हावी डर: स्कैमर्स जानबूझकर घबराहट पैदा करते हैं (₹आपका आधार ड्रग्स से जुड़ा है,₹ ₹आपको 30 मिनट में गिरफ्तार कर लिया जाएगा₹)। पीड़ित रुककर जांच करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते।

* अधिकार का भ्रम (Authority Bias): नकली वर्दी, मुहरें और कानूनी शब्दों का इस्तेमाल पीड़ितों को तुरंत आज्ञा मानने पर मजबूर कर देता है।

* अलग-थलग करने की रणनीति: पीड़ितों को परिवार या दोस्तों को सूचित न करने के लिए कहा जाता है, जिससे उन्हें कोई दूसरी सलाह नहीं मिल पाती।

* जल्दबाजी का दबाव: झूठी समय सीमाएं (Deadlines) वेरिफिकेशन से पहले ही तत्काल कार्रवाई करने के लिए मजबूर करती हैं।

* डिजिटल अनभिज्ञता: बुजुर्ग नागरिक या नए इंटरनेट उपयोगकर्ता हेल्पलाइन नंबर (1930) या पोर्टल (cybercrime.gov.in) के बारे में नहीं जानते होंगे।

* कॉलर आईडी/वीडियो पर भरोसा: स्पूफ किए गए नंबर और पहले से तैयार किए गए (Staged) वीडियो कॉल बहुत असली लगते हैं।

घोटाले का तरीका (Scam Playbook)

1. झटका: ₹आपकी पहचान अपराध से जुड़ी है।₹

2. अलगाव: ₹किसी को मत बताना, वरना जेल होगी।₹

3. नियंत्रण: पीड़ित को कई दिनों तक ₹डिजिटल अरेस्ट₹ में रखा जाता है।

4. वसूली: पैसे ₹सुरक्षित खातों₹ में ट्रांसफर करवा लिए जाते हैं।

इस चक्र को तोड़ना

* जांच को सामान्य बनाएं: इसे एक आदत बना लें, जैसे रात में अपना दरवाजा लॉक करना।

* सार्वजनिक संदेश: ₹कोई भी पुलिस या जज आपको कभी भी कॉल पर गिरफ्तार नहीं करेगा। हमेशा जांच करें।₹

* पारिवारिक जागरूकता: खुली चर्चा को प्रोत्साहित करें—कोई भी कदम उठाने से पहले रिश्तेदारों को कॉल करें।

* अधिकारी संपर्क: पोस्टर्स, ट्वीट्स और द्विभाषी परामर्शों के जरिए इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए: डिस्कनेक्ट, वेरिफाई, रिपोर्ट।

वेरिफिकेशन (जांच) घोटाले को क्यों रोकता है?

* घोटाले की तकनीक: अपराधी पुलिस/जज बनकर पीड़ितों को अकेलेपन और पैसे ट्रांसफर करने के लिए मजबूर करते हैं।

* मनोवैज्ञानिक जाल: पीड़ितों पर गोपनीयता और घबराहट बनाए रखने का दबाव डाला जाता है।

* चक्र तोड़ना: निकटतम पुलिस स्टेशन को एक त्वरित कॉल या आधिकारिक पोर्टल की जांच करने से धोखाधड़ी का तुरंत पर्दाफाश हो जाता है। कोई भी वैध अधिकारी फोन/वीडियो कॉल पर गिरफ्तारी नहीं करता है।

बचाव के मुख्य कदम

* कॉलर आईडी या वीडियो कॉल पर भरोसा न करें।

* फोन काट दें और पुलिस स्टेशन या हेल्पलाइन (1930) के माध्यम से पुष्टि करें।

* अनचाहे कॉल पर कभी भी आधार, पैन या बैंक विवरण साझा न करें।

* परिवार के सदस्यों, विशेष रूप से बुजुर्ग नागरिकों को शिक्षित करें।

* एनसीआरपी (cybercrime.gov.in) पर तुरंत रिपोर्ट करें।

जोखिम और खतरे के संकेत

* आधार/फोन से जुड़े अपराधों का आरोप लगाने वाले अनचाहे कॉल।

* गोपनीयता बनाए रखने की मांग।

* तत्काल गिरफ्तारी या खातों को फ्रीज करने की धमकी।

* ₹सुरक्षित खातों₹ में पैसा ट्रांसफर करने का अनुरोध।

काम की बात (Takeaway)

यदि आपको ऐसा कोई कॉल आता है:

1. तुरंत डिस्कनेक्ट करें।

2. आधिकारिक पुलिस/न्यायिक संपर्कों से पुष्टि करें।

3. एनसीआरपी (cybercrime.gov.in) पर रिपोर्ट करें या 1930 डायल करें।

4. परिवार/दोस्तों को सूचित करें—स्कैमर्स अकेलेपन का फायदा उठाते हैं।

संक्षेप में: डिजिटल अरेस्ट स्कैम के खिलाफ एकमात्र ढाल आधिकारिक चैनलों के माध्यम से वेरिफिकेशन (जांच) है। जब पीड़ित असली अधिकारियों से पुष्टि करते हैं, तो डर गायब हो जाता है और यह हॉलीवुड-शैली का घोटाला एक शक्तिहीन झांसा बन जाता है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

चेहरा धोने के नियम , सलाह और सावधानियां ----शहनाज़ हुसैन

चेहरा धोना बेसिक स्किन केयर रूटीन है / चेहरा धोना त्वचा की देखभाल का सबसे आसान काम लगता है / साफ़ सुथरी और आकर्षक त्वचा पाने की चाहत में हम दिन में बार बार चेहरा धोते हैं / सही तरीके से चेहरा धोने से हमारी त्वचा ताजा , साफ़ और स्वास्थ्य दिखती है लेकिन लगभग 80 प्रतिशत लोग चेहरा धोने में गलतियाँ करते हैं और कुछ तो हर घण्टे चेहरा धोते हैं लेकिन इसके बाबजूद उनकी त्वचा नीरस , डल और बेजान सी दिखती है जिसकी बजह से बह निराश ,परेशान से दिखते हैं / दरअसल चेहरा धोते समय की गई कुछ गलतियों की बजह से हमारी त्वचा को फायदे की बजाय नुकसान पहुंचता है और ज्यादातर लोग यह गलतियां अनजाने में कर बैठते हैं /

1 ------मेरी यह सलाह है की चेहरा धोने से पहले अपने हाथों को साबुन से जरूर साफ़ कर लें / हमारे हाथ निरन्तर बैक्टीरिया , तेल और गन्दगी के सम्पर्क में आते रहते हैं / गन्दे हाथों से चेहरा धोने से गन्दगी चेहरे पर फैल सकती है जिससे चेहरे के रोमछिद्र बंद हो जाते है और कील , मुहांसे निकल आते हैं / इससे त्वचा सम्बन्धी अनेक समस्याएं हो सकती हैं /

2 ----चेहरे को गर्म पानी से धोने से बचें / गर्म पानी से चेहरा धोने से त्वचा की प्रकृतिक नमी खतम हो जाती है / इस सूखेपन से निपटने के लिए त्वचा ज्यादा तेल स्त्रावित करने लगती है जोकि कील मुहांसों का कारण बनता है / अगर आप ठंडे पानी से चेहरा धोते हैं तो त्वचा के छिद्र सिकुड़ जाते है जिसकी बजह से चेहरा सही तरह से साफ़ नहीं हो पाता है / अगर आप कील मुहांसो से परेशान हैं तो ठन्डे पानी से मुंह धोने से परेशानी बढ़ सकती है क्योंकि ठंडा पानी त्वचा की सूजन जरूर कम करता है लेकिन मुहांसों से होने बाली सूजन को कम नहीं कर सकता / इसलिए चेहरा धोने के लिए हमेशा गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें और चेहरा रगड़ने की बजाय थपथपाकर सुखाएं / गुनगुना पानी रोमछिद्रों को खोलकर चेहरे से तेल और गंदगी को पूरी तरह हटा देता है और चेहरे के प्रकृतिक तेल और नमी को भी बनाए रखता है / सर्दियों में त्वचा को कोमल और मुलायम बनाये रखने के लिए गुनगुना पानी सबसे बेहतर माना जाता है /

3 -----चेहरे को धोने के लिए ज्यादा फेस वॉश का उपयोग नुकसान पहुंचा सकता हैं / ज्यादा फेस वॉश लगाने से त्वचा का नेचुरल आयल खतम हो जाता है और त्वचा रूखी रूखी लगने लगती है / चेहरा धोने के लिए मटर के दाने के बराबर फेस वाश काफी होता है / इसे अपनी हथेली पर डाल कर आपस में रगड़ कर झाग बनाएं और साफ़ उँगलियों की मदद से गीले चेहरे पर समान रूप से लगाएं / इसे आहिस्ता से गोलाकार गति में लगाएं क्योंकि इसके जोर से रगड़ने से त्वचा में घाव हो सकते हैं / इसके बाद इसे गुनगुने पानी से धो डालें / फेस वॉश का

चयन करती बार अपनी स्किन टाइप का ध्यान रखें क्योंकि गलत फेस वॉश इस्तेमाल करने से नुकसान हो सकता है / रूखी त्वचा की लिए क्रीम आधारित फेस वॉश और संबेदनशील त्वचा के लिए माइल्ड क्लेंज़र का उपयोग करना चाहिए

4 ------मेरा यह मानना है की दिन में में चेहरे को सुबह और शाम दो बार धोना बेहतर होता है / सुबह चेहरा धोने से रात की गंदगी और आयल क्लीन हो जाता है जबकि शाम को चेहरा धोने से दिन भर की धूल ,मिट्टी और प्रदूषण हट जाता है

बार बार चेहरा धोना त्वचा को नुकसानदायक हो सकता है / अगर चेहरा धोने के बाद आपकी त्वचा रूखी और खिंची -खिंची सी लगती है और आप बार बार चेहरा धो रहे हैं क्योंकि बार बार चेहरा धोने से चेहरे का प्रकृतिक तेल और नमी गायब हो जाती है जिससे चेहरे की सुरक्षा परत कमजोर पढ़ जाती है /

चेहरा धोने में कम से कम एक मिनट तो लगाना ही चाहिए ताकि चेहरे की सारी मैल और गन्दगी निकल जाये / आप चाहे तो दो या तीन मिनट भी लगा सकते हैं ताकि त्वचा को पूरा समय मिल सके / मेरा यह मानना है की चेहरा धोने का कोई मानक तय नहीं किया गया है बल्कि यह स्किन टाइप पर निर्भर करता है /

5 ----चेहरा धोने के साथ सुखाना भी जरूरी होता है / चेहरा सुखाने के लिए मुलायम सूती साफ़ तौलिये का इस्तेमाल करें / गंदे तौलिये पर बैक्टीरिया हो सकते हैं जोकि आपकी त्वचा पर जम जायेंगे जोकि रोमछिद्रों को बंद कर सकते हैं जिससे मुहांसे और त्वचा की समस्याएं पैदा हो सकती हैं /आप चाहें तो त्वचा को प्रकृतिक तौर पर भी सूखने दे सकते हैं / तौलिये से त्वचा को हल्के से थपथपाकर सुखाएं और रगड़ने से परहेज करें खासकर अगर आपकी त्वचा संवेदनसील , रूखी और कील मुहांसों से ग्रसित हो / चेहरा सुखाने के लिए आप फेस वाइप्स का इस्तेमाल भी कर सकते हो लेकिन इसके नियमित परहेज से बचें / इनमें प्रेजर्वेटिव होते हैं जोकि त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं /

कैंसर से बचने के उपाय

आधुनिक विश्व में कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिससे सबसे ज़्यादा लोगों की मृत्यु होती है। विश्व में इस बीमारी की चपेट में सबसे अधिक मरीज़ हैं। तमाम प्रयासों के बावजूद कैंसर के मरीजों की संख्या में कोई कमी नहीं आ रही है।

इसी कारण विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस की तरह मनाने का निर्णय लिया ताकि लोगों को इस भयानक बीमारी कैंसर से होने वाले नुकसान के बारे में बताया जा सकें और लोगों को अधिक से अधिक जागरूक किया जा सकें। ऐसा माना जा रहा है 2030 तक कैंसर के मरीजों की संख्या 1 करोड़ से भी अधिक हो सकती हैं।

एक अनुमान के मुताबिक़ 2005 में 7.6 लाख लोग कैंसर से मौत के आगोश में समा गए थे इतनी बड़ी संख्या में लोगों के मरने से और विश्व स्तर पर इस बीमारी के फैलने से सब चिंतित हैं।

विश्व कैंसर दिवस के इतिहास के बारे में बात करें तो इसकी सही शुरुआत वर्ष 2005 से हुई थी। तब से यह दिन विश्व में कैंसर के प्रति निरंतर जागरुकता फैला रहा है। भारत में भी इस दिन सभी स्वास्थ्य संगठनों ने जागरुकता फैलाने का निश्चय लिया है।

कैंसर से बचाव के मुख्य उपायों को हम कुछ श्रेणियों में बांट सकते हैं:

1. खान-पान और पोषण आपका आहार कैंसर के विरुद्ध आपकी पहली रक्षा पंक्ति है।

* फल और सब्जियां: अपने भोजन में रंग-बिरंगे फल और सब्जियों को शामिल करें। इनमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर की कोशिकाओं की रक्षा करते हैं।

* प्रोसेस्ड फूड से दूरी: डिब्बाबंद खाना, ज्यादा नमक और प्रोसेस्ड मीट (जैसे सलामी, सॉसेज) से बचें।

* चीनी और रिफाइंड कार्ब्स: अधिक चीनी और मैदा मोटापे का कारण बनते हैं, जो कई प्रकार के कैंसर से जुड़ा है।

* पानी की पर्याप्त मात्रा: शरीर को हाइड्रेटेड रखें ताकि टॉक्सिन्स बाहर निकलते रहें।

2. हानिकारक आदतों का त्याग यह सबसे महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि कैंसर के बहुत से मामले सीधे तौर पर आदतों से जुड़े होते हैं।

* तंबाकू का पूर्ण त्याग: चाहे सिगरेट हो, बीड़ी हो या चबाने वाला तंबाकू (गुटखा)—यह फेफड़ों, मुंह और गले के कैंसर का सबसे बड़ा कारण है।

* शराब का सीमित सेवन: शराब के अधिक सेवन से लिवर, स्तन और कोलोन कैंसर का खतरा बढ़ जाता है।

3. सक्रिय जीवनशैली गतिहीन जीवनशैली शरीर के लिए हानिकारक है।

* नियमित व्यायाम: दिन में कम से कम 30 मिनट की पैदल चाल, योग या कसरत करें।

* वजन नियंत्रण: शरीर का वजन संतुलित रखने से हार्मोनल संतुलन बना रहता है, जिससे कैंसर की संभावना कम होती है।

4. सुरक्षात्मक उपाय बाहरी कारकों से खुद को बचाना भी जरूरी है।

* धूप से बचाव: तेज धूप (UV किरणों) से बचें। बाहर निकलते समय सनस्क्रीन, टोपी या छतरी का प्रयोग करें ताकि स्किन कैंसर का खतरा न हो।

* टीकाकरण कुछ वायरस कैंसर का कारण बनते हैं। डॉक्टर की सलाह पर Hepatitis B और HPV (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) के टीके जरूर लगवाएं।

* प्रदूषण और रेडिएशन: औद्योगिक रसायनों और अनावश्यक रेडिएशन (जैसे बार-बार एक्स-रे) के संपर्क में आने से बचें।

5. नियमित जांच कैंसर का इलाज तभी सबसे प्रभावी होता है जब उसका पता शुरुआती चरण में चल जाए।*

* सेल्फ एग्जामिनेशन: अपने शरीर में होने वाले किसी भी नए बदलाव, गांठ या पुराने तिल के रंग बदलने पर ध्यान दें।

* रूटीन चेकअप: 40 की उम्र के बाद महिलाओं के लिए मैमोग्राफी और पुरुषों के लिए प्रोस्टेट कैंसर की जांच जैसे नियमित टेस्ट करवाते रहें।

याद रखें: कैंसर से डरना नहीं, बल्कि लड़ना और उससे बचना जरूरी है।

बचाव ही उपचार से बेहतर है की बात यहां पूरी तरह सटीक बैठती है।

कैंसर और जागरूकता

पिंकी कुंडू

वर्ल्ड कैंसर डे हर साल 4 फरवरी को मनाया जाता है। इस दिन का मुख्य मकसद कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाना, बचाव के तरीके बताना और कैंसर के मरीजों को साइकोसोशल सपोर्ट देना है।

1. मकसद और महत्व

* जागरूकता कैंसर के लक्षणों, कारणों और बचाव के बारे में सही जानकारी समाज तक पहुंचाना।

* जल्दी डायग्नोसिस का महत्व यह विश्वास पैदा करना कि अगर शुरुआती स्टेज में पता चल जाए तो कैंसर पूरी तरह से ठीक हो सकता है।

* भेदभाव खत्म करना कैंसर के मरीजों के लिए दया, सम्मान और समान इलाज की कोशिश करना।

2. 2024–2026 के लिए ग्लोबल थीम "केयर गैप को कम करना"

* इलाज में गैप को कम करना गरीब और अमीर, गांव और शहर के बीच कोई फर्क किए बिना

* हर व्यक्ति को सही, समय पर और सस्ता इलाज मिलना चाहिए

* यह इस थीम का मुख्य मैसेज है।

3. कैंसर के मुख्य कारण तंबाकू, सिगरेट, गुटखा और शराब का सेवन

* बदला हुआ लाइफस्टाइल और जंक फूड का ज़्यादा सेवन

* एक्सरसाइज की कमी और मोटापा

* लगातार प्रदूषण और नुकसानदायक केमिकल के संपर्क में रहना

4. हम क्या कर सकते हैं?

* रेगुलर चेक-अप उम्र के हिसाब से और डॉक्टर की सलाह पर कैंसर की स्क्रीनिंग करवाएं।

* नशा न करें तंबाकू और शराब से पूरी तरह दूर रहें।

* हेल्दी डाइट अपनी डाइट में फल, सब्जियां, हरी पत्तेदार सब्जियां और नैचुरल खाना शामिल करें।

* एक्टिव लाइफस्टाइल हर दिन कम से कम 30 मिनट टहलें/एक्सरसाइज करें।

कैंसर सिर्फ एक बीमारी नहीं है, लेकिन इससे लड़ना हिम्मत, सब्र और उम्मीद का सफर है। सही जानकारी + समय पर इलाज = सुरक्षित भविष्य

प्रोटीन की कमी और कैंसर : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्रोटीन की कमी सीधे तौर पर कैंसर उत्पन्न नहीं करती, लेकिन यदि लंबे समय तक शरीर को पर्याप्त प्रोटीन न मिले, तो यह शरीर में ऐसे हालात पैदा कर सकती है जो कैंसर के विकास और उसकी प्रगति को आसान बना देते हैं।

प्रोटीन की कमी किस प्रकार कैंसर के जोखिम को बढ़ा सकती है

1. प्रतिरक्षा तंत्र की कमजोरी (Weakened Immune Surveillance)

शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को निम्नलिखित बनाने के लिए प्रोटीन की आवश्यकता होती है:

एंटीबॉडी

टी-कोशिकाएँ (T-cells)

नैचुरल किलर कोशिकाएँ (NK cells)

जब शरीर में प्रोटीन की कमी होती है, तब प्रतिरक्षा तंत्र असामान्य या पूर्व-कैंसर कोशिकाओं को पहचानने और नष्ट करने में असमर्थ हो जाता है।

* परिणामस्वरूप, परिवर्तित (mutated) कोशिकाओं को जीवित रहने और बढ़ने का अवसर मिल जाता है।

2. डीएनए मरम्मत में बाधा (Impaired DNA Repair)

डीएनए की मरम्मत करने वाले अधिकांश एंज़ाइम प्रोटीन से बने होते हैं।

प्रोटीन की कमी से:

डीएनए क्षति की मरम्मत घट जाती है

आनुवंशिक उत्परिवर्तन (mutations) जमा होने लगते हैं

* अधिक उत्परिवर्तन का अर्थ है कैंसर का अधिक खतरा।

3. दीर्घकालिक सूजन (Chronic Inflammation)₹

प्रोटीन की कमी:

आंतों की संरचना को कमजोर करती है

चयापचय (metabolism) को बिगाड़ती है

इससे शरीर में हल्की लेकिन लगातार बनी रहने वाली सूजन उत्पन्न हो सकती है, जिसे कैंसर-उत्पादक वातावरण माना जाता है।

4. हार्मोनल और चयापचयी असंतुलन

प्रोटीन की कमी से निम्नलिखित हार्मोन प्रभावित होते हैं:

इंसुलिन

IGF-1

तनाव हार्मोन (जैसे कॉर्टिसोल)

इनका असंतुलन कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि को बढ़ावा दे सकता है।

5. पहले से मौजूद कैंसर में खराब परिणाम

कैंसर से ग्रस्त रोगियों में प्रोटीन की कमी:

कैशेक्सिया (मांसपेशियों का तेज़ी से क्षय) को बढ़ाती है

कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी की सहनशीलता घटाती है

जीवित रहने की संभावना कम करती है

प्रोटीन की कमी क्या नहीं करती

यह अपने आप कैंसर उत्पन्न नहीं करती

यह कैंसरकारक (carcinogen) की तरह कार्य नहीं करती

केवल अधिक प्रोटीन लेना कैंसर से सुरक्षा की गारंटी नहीं है

कैंसर एक बहु-कारक रोग है — जिसमें आनुवंशिकता, पर्यावरण, जीवनशैली और पोषण सभी की भूमिका होती है।

संतुलित दृष्टिकोण (Balanced Perspective)

बहुत कम प्रोटीन ⟶ शरीर की रक्षा प्रणाली कमजोर

अत्यधिक प्रोसेस्ड या लाल मांस ⟶ कुछ कैंसर का जोखिम बढ़ा सकता है

पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण प्रोटीन ⟶ प्रतिरक्षा और कोशिका मरम्मत को मजबूत करता है

उत्तम प्रोटीन स्रोत

दालें, चना, राजमा

अंडा, दूध, दही, पनीर

मछली

सोया, मूंगफली, मेवे और बीज

निष्कर्ष

* प्रोटीन की कमी अप्रत्यक्ष रूप से कैंसर को बढ़ावा दे सकती है

* लेकिन यह सीधे कैंसर का कारण नहीं होती

भारत में व्यापक सूक्ष्म-पोषक तत्वों की कमी: एक मूक स्वास्थ्य संकट

भारत तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक विविधता वाला देश है, लेकिन इसके भीतर एक गंभीर और अक्सर अनदेखा किया जाने वाला स्वास्थ्य संकट छिपा हुआ है —

विटामिन D, विटामिन B12, प्रोटीन और कैल्शियम की व्यापक कमी।

यह समस्या केवल गरीब या कुपोषित वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि शहरी, शिक्षित और आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग भी इससे उतना ही प्रभावित है।

1. विटामिन D की कमी — धूप के देश में एक विडंबना

भारत जैसे धूप-प्रधान देश में विटामिन D की कमी होना अपने आप में चौंकाने वाला तथ्य है।

अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार 70% से 90% भारतीयों में विटामिन D का स्तर सामान्य से कम है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में।

बड़े पैमाने पर किए गए विश्लेषण (जैसे Tata 1mg के 2.2 लाख से अधिक लोगों के डेटा) बताते हैं कि लगभग 75–80% वयस्कों में विटामिन D की कमी पाई गई, और सबसे अधिक प्रभावित वर्ग 25 वर्ष से कम आयु के युवा हैं।

इसके प्रमुख कारण:

इनडोर जीवनशैली: दफ़्तरों में लंबे समय तक रहना, ऊँची इमारतों में रहना, स्क्रीन-आधारित जीवन।

वायु प्रदूषण: UVB किरणों को रोक देता है, जो त्वचा में विटामिन D बनने के लिए आवश्यक हैं।

गहरी त्वचा का रंग और पारंपरिक वस्त्र, जिससे त्वचा पर धूप कम पड़ती है।

आहार में कमी: मछली, अंडा, फोर्टिफ़ाइड दूध जैसे प्राकृतिक स्रोतों का सीमित सेवन।

स्वास्थ्य पर प्रभाव:

विटामिन D केवल हड्डियों तक सीमित नहीं है। इसकी कमी से:

ऑस्टियोपोरोसिस और रिकेट्स

मांसपेशियों की कमजोरी, थकान

रोग-प्रतिरोधक क्षमता में कमी

अवसाद, मधुमेह, हृदय रोग

कुछ प्रकार के कैंसर का जोखिम तक बढ़ जाता है।

2. विटामिन B12 की कमी — व्यापक लेकिन उपेक्षित विटामिन B12 की कमी भारत में स्थानिक (Endemic) बन चुकी है।

विभिन्न शोधों के अनुसार 40% से 70% भारतीयों में B12 की कमी पाई जाती है।

सीमांत (borderline) मामलों को जोड़ने पर यह आँकड़ा 60–70% तक पहुँच जाता है।

शहरी पेशेवरों पर किए गए एक अध्ययन में 57% पुरुष और लगभग 50% महिलाएँ B12 की कमी से ग्रस्त पाई गईं।

इतनी व्यापक क्यों है यह समस्या?

आहार कारण:

विटामिन B12 मुख्यतः पशु-आधारित खाद्य पदार्थों (मांस, मछली, अंडा) में पाया जाता है।

भारत में बड़ी आबादी शाकाहारी है, जिससे प्राकृतिक B12 का सेवन बहुत कम हो जाता है।

अवशोषण की समस्या:

पाचन संबंधी रोग, उम्र बढ़ना और कुछ दवाओं का लंबे समय तक सेवन B12 के अवशोषण को बाधित करता है।

इसके गंभीर प्रभाव:

एनीमिया (खून की कमी)

अत्यधिक थकान

याददाश्त और एकाग्रता में कमी

अवसाद

हाथ-पैरों में झुनझुनी या सुन्नता

लंबे समय तक कमी रहने पर स्थायी तंत्रिका क्षति

3. प्रोटीन और कैल्शियम — कम चर्चा, बड़ा असर हालाँकि राष्ट्रीय स्तर पर इनकी चर्चा कम होती है, लेकिन:

बड़ी संख्या में भारतीय, विशेषकर महिलाएँ, बच्चे और निम्न-आय वर्ग, अनुशंसित मात्रा (RDA) से कम प्रोटीन और कैल्शियम लेते हैं।

यह स्थिति:

विटामिन D की कमी के प्रभाव को और बढ़ा देती है

हड्डियों को कमजोर बनाती है

ऑस्टियोपीनिया, ऑस्टियोपोरोसिस और फ्रैक्चर का जोखिम बढ़ाती है

4. सार्वजनिक स्वास्थ्य पर प्रभाव यह पोषण संकट जीवन के हर चरण को प्रभावित करता है।

अल्पकालिक प्रभाव:

थकान

मांसपेशियों की कमजोरी

मूड स्विंग्स

ध्यान और सोचने की क्षमता में कमी

बच्चों में विकास में देरी और हड्डियों की विकृति (रिकेट्स)

दीर्घकालिक खतरे:

वृद्धावस्था में हड्डियाँ टूटने का उच्च जोखिम

तंत्रिका तंत्र को स्थायी नुकसान

मधुमेह, हृदय रोग जैसे गैर-संचारी रोगों का बढ़ता खतरा

5. भारत में यह समस्या इतनी व्यापक क्यों है? इस विरोधाभास के पीछे कई कारण एक साथ काम करते हैं:

जीवनशैली और शहरीकरण

आधुनिक जीवनशैली ने हमें धूप और शारीरिक गतिविधि दोनों से दूर कर दिया है।

आहार संबंधी आदतें शाकाहार प्रधान आहार + कम फोर्टिफ़ाइड भोजन = B12 और प्रोटीन की कमी।

जागरूकता और जांच की कमी

अधिकांश लोग तब तक जांच नहीं कराते जब तक लक्षण गंभीर न हो जाएँ।

नीतिगत कमी नमक में आयोडीन की तरह विटामिन D और B12 के लिए कोई राष्ट्रीय फोर्टिफिकेशन नीति अभी प्रभावी रूप से लागू नहीं है।

6. हालिया रुझान और प्रयास

स्वास्थ्य विशेषज्ञ अब इसे "मूक महामारी" कह रहे हैं।

बड़े स्तर पर स्क्रीनिंग, जन-जागरूकता और फोर्टिफ़िकेशन कार्यक्रमों की माँग बढ़ रही है।

मीडिया और अकादमिक जगत में समय पर पहचान, संतुलित आहार और सुरक्षित सप्लीमेंटेशन पर ज़ोर दिया जा रहा है।

7. सारांश (Key Takeaways)

पोषक तत्व

भारत में अनुमानित कमी

मुख्य कारण

प्रमुख प्रभाव

विटामिन D

70–90%

कम धूप, प्रदूषण

कमजोर हड्डियाँ, थकान

विटामिन B12

40–70%

शाकाहार

एनीमिया, तंत्रिका क्षति

प्रोटीन / कैल्शियम

व्यापक कमी

आहार गुणवत्ता

मांसपेशी व हड्डी कमजोरी

व्यक्तिगत स्तर पर क्या किया जा सकता है?

* समय-समय पर रक्त जांच कराएँ

* रोज़ाना 15–20 मिनट सुरक्षित धूप लें

* आहार में प्रोटीन और फोर्टिफ़ाइड खाद्य पदार्थ शामिल करें

* डॉक्टर की सलाह से सप्लीमेंट लें।

हनुमान जी की नौ निधि – आज हमारे घाव कैसे भरती है।

*पिंकी कुंडू,

कभी-कभी ज़िन्दगी में हम बाहर से बिल्कुल ठीक दिखते हैं, पर भीतर दिल टूटा हुआ होता है, मन थका हुआ होता है, आत्मा घायल होती है। लोग हमारे आसपास हँसते रहते हैं, पर हमें ही पता है कि कितनी चोटें हैं, जो बोलती नहीं। कितनी रातें हम बिना कहे रो देते हैं। कितने धक्के और अनसुने ताने मन में जंग लगा देते हैं।

ऐसे समय में हनुमान चालीसा का एक छोटा सा वाक्य मन को भीतर से पकड़ कर ऊपर उठा देता है—

"अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता।"

आज हम इन्हीं नौ निधियों की बात करते हैं। ये सोने-चांदी की दौलत नहीं,

ये आत्मिक शक्तियाँ हैं, जो ज़िन्दगी को संभालने की ताकत देती हैं और आज हर इंसान को यही चाहिए।

नौ निधि क्या हैं? ये नौ आध्यात्मिक वरदान हैं जो मन को शक्तिशाली, स्थिर, निडर और शांत बनाते हैं।

1. पद्म (कमल जैसी पवित्रता):- आज की समस्या है कि लोगों की नज़र में हम अच्छा दिखने की कोशिश करते हैं । सोशल मीडिया में तुलना होती है ।नकारात्मक लोग आपकी पवित्र नीयत पर कीचड़ फेंकते हैं।

समाधान क्या है? हनुमान जी सी पवित्रता लाइये, किसी भी कीचड़ में जाओ, कमल की तरह ऊपर उठकर बाहर आओ। दूसरों के शब्द तुम्हें गंदा नहीं कर सकते, अगर तुम भीतर से साफ़ हो।

2. महापद्म (महानता की निधि):- आज की समस्या है जीवन में अनदेखे रह जाना। आप मेहनत करते हो पर कोई सराहना नहीं करता। रामायणजी कहती है कि हनुमानजी ने कभी अपनी महानता का शोर नहीं मचाया, फिर भी दुनिया ने उनका कद सबसे ऊँचा माना। महानता बोलने से नहीं, कर्म से आती है।

3. शंख (शांत मन):- आज की समस्या है कि हर छोटी-छोटी बात पर हमें चिंता, घबराहट, बेचैनी हो जाती है। हमारी नींद उड़ जाती है। रामायण में समुद्र पार करते वक्त हनुमानजी ने मन को शंख की ध्वनि जैसा शांत रखा। शोर बाहर हो, पर भीतर शांति हो। यही शंख है।

4. मकर (जोखिम उठाने की क्षमता):- आज की समस्या है कि लोग एक कदम भी आगे बढ़ने से डरते हैं- नई जॉब, नया रिश्ता, नई शुरुआत। हनुमान जी की उड़ान—पहला कदम सबसे कठिन था, बाकी रास्ता खुद बनता गया। डर को हराओ, राह खुद खुल जाएगी।

5. कच्छप (धैर्य):- आज सबको हर काम का "फ़ौरन" परिणाम चाहिए। रिलेशन, करियर, पैसे—सब तुरंत चाहिए। रामायण कहती है कि कच्छप यानी कछुआ धीमा है, पर हर तूफ़ान को झेलता है। धीमे चलो, पर टूटो मत। धीरे-धीरे आपका समय आएगा।

6. मुकुंद (मुक्ति की शक्ति):- आज—टॉक्सिक लोग, पुराने घाव, बुरे अनुभव— मन को पकड़कर रखते हैं। हनुमान जी की तरह जिसे जाने देना हो-जाने दो। मुक्त हो जाओ, नहीं तो मन भारी ही रहता है।

7. नंद (आनंद):- आज की समस्या है कि लोग खुश दिखते हैं, पर भीतर खालीपन है। हर खुशी कृत्रिम और क्षणिक है ।रामायण कहती है कि सच्चा आनंद "कर्म और भक्ति" में है, "दिखावे और अपेक्षा" में नहीं।

8. नील (साहस):- लोगों के ताने सुनकर हम साहस खो देते हैं। हर कोई कहता है कि "ये मत करो, वो गलत है, तुमसे नहीं होगा।" हनुमानजी का साहस किसी की राय से नहीं टूटता। अपने भीतर की आवाज़ सुनो, दुनिया की नहीं।

9. शौभ (आत्म-चमक):- हमारी समस्या है- लोगों से मान्यता मांगना—"क्या मैं ठीक लग रहा हूँ?" "क्या लोग मेरे बारे में अच्छा सोचते हैं?" हनुमान जी कहते हैं कि जब भीतर का दीपक जलता है, दुनिया खुद चमकने लगती है। मान्यता भीतर से आती है।

ध्यान रखिए: आप चाहे कितने भी टूटे हों, कितनी भी चोटें हों, कितनी भी उदासी भीतर बैठी हो, हनुमान चालीसा की नौ निधियाँ आपको फिर से खड़ा कर देती हैं। क्योंकि ये बाहर की दुनिया नहीं बदलती, ये आपको भीतर से बदल देती हैं। मन को ठीक कर लो, दुनिया खुद ठीक दिखाई देने लगती है।

अंत में एक छोटा मंत्र: जब भी मन दुखे, बस एक बात याद रखिए— हनुमान जी केवल युद्ध नहीं जीताते, दिल भी ठीक कर देते हैं। आप अकेले नहीं हैं। आप टूटे नहीं हैं। आप बस थोड़े थके हुए हैं और रामायण कहती है कि थके हुए लोगों की भगवान सबसे पहले सहायता करते हैं। हनुमान चालीसा पढ़ने के साथ साथ अपने जीवन में भी अपनाइए, जीवन बहुत सुंदर और आसान बन जाएगा।

न्यायाधीश शनिदेव

बात उस समय की है जब भगवान विष्णु, शंकर और ब्रह्मा के बीच एक संवाद शुरू हुआ। यह संवाद था संसार में एक न्याय अधिकारी को जन्म देने का। यह संवाद तब शुरू हुआ जब देवो और असुरों के बीच लगातार युद्ध हो रहा था। वरन असुरो को लगता था कि बाद जब न्याय की बात आती है तो फैसला देवों के हक में सुनाया जाता है। परंतु असुरों के गुरु शुक्राचार्य को भगवान शंकर पर पूर्ण विश्वास था कि वह देवों के साथ असुरों के हितों की भी रक्षा करेंगे। मसलन सच तो यही है कि भगवान शंकर ने अपने परम भक्त शुक्राचार्य को निराश नहीं किया। भगवान्-शंकर ही थे जिन्होंने शनिदेव के जन्म की पटकथा लिखी। शनिदेव का जन्म सूर्य पुत्र के रूप में हुआ जिनकी मां का नाम छाया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार छाया ने शनि को एक जंगल में छुपा के रख उनका वही पालन-पोषण किया। यम के अलावा शनि भी एक पुत्र है। शनि देव को भी नहीं मालूम था उनके पिता स्वयं सूर्य देव है। लेकिन यह राज बहुत दिनों तक छुप ना सका। क्योंकि संसार को उसका न्याय अधिकारी मिलना था जो कर्मों के आधार पर लोगों को न्याय और दंड देगा। इधर देवाधिपति इंद्र देव और शुक्राचार्य जो असुरो के गुरु थे उनके बीच न्याय अधिकारी के अस्तित्व को जानने के लिए खलबली मची हुई थी। इसी खलबली का नतीजा एक चक्रवात के रूप में आया जिसका संचालन शुक्राचार्य कर रहे थे। दरअसल, शुक्राचार्य को मोहरा बनाते हुए इंद्र देव ने एक षड्यंत्र रचा था। सही मायनों में इस चक्रवात के लिए इंद्रदेव जिम्मेदार थे जिन्होंने असुरों के गुरू शुक्राचार्य को उकसाया। इस चक्रवात की चपेट में शनि की माता छाया आ गई जिससे शनि देव नाराज हो गए और शंकर भगवान की कृपा से उन्हें अपनी शक्तियों का बोध हो गया और उन्होंने अपनी माँ छाया को बचा लिया। इसके बाद सूर्य देव चक्रवात से क्रोधित हो गए और उन्होंने शुक्राचार्य और इंद्र देव को सूर्य लोक में बुलाया। जहां पर चक्रवात के दोषी को दंड दे कर न्याय दिया जाना था। लेकिन शुक्राचार्य की बात सुने बिना सूर्य देव ने शुक्राचार्य को दोषी करार दे दिया इसको देखते हुए वहां शनि देव प्रकट हो गए उन्होंने न्याय अधिकारी के रूप में उचित न्याय किया।

देवीपाटन का मां पाटेश्वरी मंदिर - यहीं पर समाईं थी देवी सीता

भारत के धार्मिक स्थल विशेषकर मंदिर एक से बढ़कर एक रहस्य अपने में समेटे हुए हैं। ऐसा ही एक मंदिर है उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जनपद के पाटन गांव में सिरिया नदी के तट पर स्थित मां पाटेश्वरी का मंदिर। इस मंदिर के कारण ही इस पूरे मंडल का नाम देवीपाटन पड़ा हुआ है। मंदिर से कई पौराणिक कहानियां तो जुड़ी ही हैं साथ ही यहां की मान्यता को हर साल यहां मां के दर्शने के लिये आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ से समझा जा सकता है।

आइये आपको बताते हैं मां पाटेश्वर के इस पौराणिक इतिहास की गाथा। मां पाटेश्वरी की यह मंदिर अपने अंदर कई पौराणिक कहानियों को समेटे हुए है। एक कथा भगवान श्री राम और माता सीता से जुड़ी है। कहते हैं कि त्रेतायुग में जब भगवान राम, रावण का संहार कर देवी सीता को अयोध्या लाये तो देवी सीता को अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ा, लेकिन कुछ समय पश्चात किसी धोबी ने अपनी पत्नी को अपनाने से इंकार करते हुए भगवान राम पर कटाक्ष किया तो भगवान राम ने गर्भवती सीता को घर से निकाल दिया। वन में सीता महर्षि वाल्मिकी के आश्रम में रहने लगी जहां उन्होंने लव-कुश को जन्म दिया इसके बाद लव-कुश ने अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े को रोककर भगवान राम को युद्ध की चुनौति दी जिसके बाद उनका परिचय हुआ। पिता पुत्र के मिलन के बाद सीता को वापस अयोध्या ले जाने को भगवान राम इसी शर्त पर तैयार थे कि माता सीता पुनः अग्नि परीक्षा से गुजरें। यह बात सीता सहन न कर सकी और उन्होंनें धरती माता को पुकारा और अपनी गोद में समा लेने की प्रार्थना की। फिर क्या था देखते ही देखते धरती का सीना फटा और धरती माता सीता को अपनी गोद में लेकर वापस पाताल लोक को गमन कर गईं। कहा

जाता है कि पाताल से धरती माता निकलने के कारण इसका नाम आरंभ में पातालेश्वरी था जो बाद में पाटेश्वरी हो गया। मान्यता है कि आज भी वहां पाताल लोक तक जाने वाली एक सुरंग मौजूद है जो चांदी के चबूतरे के रूप में दिखाई देती है।

51 शक्तिपीठों में से एक मां पाटेश्वरी का मंदिर वहीं मां पाटेश्वरी के इस मंदिर से एक कथा देवी सती की शक्तिपीठों से भी जुड़ी है। जब देवी सती के पिता दक्ष प्रजापति ने यज्ञ में माता सती के पति भगवान भोलेनाथ शिवशंकर को आमंत्रित नहीं किया तो देवी ने यज्ञ में जाने की जिद की। देवी यज्ञ में अपने पिता से निमंत्रण न देने का कारण जानने लगी तो उनके पिता दक्ष भगवान शंकर का अपमान करने लगे जिसे देवी सहन कर सकी और हवन कुंड में कूदकर अपनी जान दे दी। भगवान शंकर को क्रोध आ गया और वो सती शव को लेकर तांडव करने लगे। दुनिया नष्ट होने की कगार पर पंहुच गई। देवताओं के सिंहासन डोलने लगे। तब भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन से देवी सती के शव को खंडित किया जहां जहां देवी के अंग व वस्त्र पड़े वहां शक्तिपीठ स्थापित हुईं। मां पाटेश्वरी के इस मंदिर के बारे में माना जाता है कि मां का वाम स्कंद यानि बायां कंधा वस्त्र सहित यहां गिरा था। स्कंदपुराण में इसका वर्णन भी मिलता है। भगवान परशुराम की तपस्थली तो कर्ण ने सीखी शस्त्र विद्या मंदिर से एक और पौराणिक कथा जुड़ी है माना जाता है कि यहीं पर भगवान परशुराम ने अपनी तपस्या की थी। उसके बाद महाभारत काल में इसी स्थान पर स्थित सरोवर जो आजकल सूर्यकुंड है, में स्नान कर दानवीर कर्ण ने भगवान परशुराम से शस्त्र विद्या ग्रहण की थी। माना यह भी जाता है कि सूर्यकुंड के जल में स्नान कर इसी जल से देवी की पूजा करने की परंपरा की शुरुआत भी करण से ही चली आ रही है उन्होंने ही इसकी शुरुआत की थी। साथ ही यह भी माना जाता है कि मंदिर का जीर्णोद्धार भी राजा करण ने कराया था। कहा जाता है कि कालांतार में विक्रमादित्य ने फिर से मंदिर का जीर्णोद्धार किया लेकिन बाद में मुगल शासक औरंगजेब ने मीर समर को मंदिर को नष्ट भ्रष्ट करने भेजा जो देवी प्रकोप का शिकार हुआ मीर समर का समाधिस्थल मंदिर के पूर्व में आज भी है। लेकिन कहा जाता है औरगंजेब ने स्वयं मंदिर को धवस्त किया जिसे बाद में फिर से बनाया गया।

गुरु गोरखनाथ ने की थी पीठ की स्थापना मां पाटेश्वरी के इस मंदिर को सिद्ध योगपीठ एवं शक्तिपीठ दोनों माना जाता है। कहा जाता है कि गुरु गोरखनाथ व पीर रत्ननाथ ने यहीं पर सिद्धियां प्राप्त की जिसके बाद उन्होंनें नाथ संप्रदाय को शुरु किया। मान्यता है कि भगवान शिव की आज्ञा से महायोगी गुरु गोरखनाथ ने सिद्ध शक्तिपीठ देवीपाटन में पाटेश्वरी पीठ की स्थापना कर मां पाटेश्वरी की आराधना एवं योगसाधना की थी। इसका उल्लेख यहां एक शिलालेख से भी मिलता है। मंदिर में देवी की प्रतिमा मां पाटेश्वरी के इस मंदिर के भीतरी कक्ष में कोई प्रतिमा नहीं बल्कि चांदी से जड़ा हुआ एक चबूतरा है जिस पर कपड़ा बिछा रहता है इसी चबूतरे के ऊपर एक ताम्र छत्र है जिस पर पूरी दुर्गा सप्तशती के श्लोक छपे हुए हैं। यहां घी की अखंड दीप ज्योति जलती रहती है माना जाता है कि यह जोत शक्तिपीठ के स्थापना काल से ही लगातार जल रही है। भीतरी कक्ष में देवी की प्रतिमा नहीं है लेकिन मंदिर में दुर्गा माता के नौ स्वरुप मां शैलपुत्री, मां ब्रह्मचारिणी, मां चंद्रघंटा, मां कूष्मांडा, स्कंदमाता, मां कात्यायनी, मां कालरात्रि, मां महागौरी एवं मां सिद्धीदात्री की प्रतिमायें स्थापित हैं।

यहां होता है कुष्ठरोगों का निवारण मां पाटेश्वरी मंदिर के उत्तर में सूर्यकुंड है। वही सूर्यकुंड जिसके जल से दानवीर कर्ण स्नान कर मां की आराधना किया करते थे। मान्यता है कि रविवार के दिन षोडशोपचार से पूजन किया जाये तो कुष्ठरोग का निवारण हो जाता है। नवरात्र पर लगता है मेला नवरात्र के दिनों में माता के हर मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ लगने लगती है लेकिन मां पाटेश्वरी के मंदिर में भारत से लेकर नेपाल तक के श्रद्धालु आते हैं। क्योंकि गुरु गोरखनाथ के शिष्य पीर रत्ननाथ की तपस्या से खुश होकर मां ने उनकी पूजा होने का वरदान दिया था। नेपाल में पीर रत्ननाथ को मानने वाले बहुत लोग हैं। वासंती नवरात्र की पंचमी को यहां नेपाल से उनकी शोभायात्रा पंहुचती है और पांच दिन तक नेपाल से आये पुजारी मां की पूजा के साथ-साथ रत्ननाथ की पूजा भी करते हैं। वहीं नवरात्र के दौरान यहां मेला भी लगता है जिसमें लाखों की संख्या में पूरे भारतवर्ष से श्रद्धालु आते हैं। मां पाटेश्वरी के मंदिर में मां के नौ रुपों की प्रतिमाएं भी यहां स्थापित हैं इस कारण भी नवरात्र के दिनों में यहां भीड़ रहती है।

श्री राम के दादा परदादा का नाम क्या था?

जानिये- हर हिंदू इस जानकारी को जाने.

1 - ब्रह्मा जी के पुत्र मरीचि,
2 - मरीचि के पुत्र कश्यप,
3 - कश्यप के पुत्र विवस्वान,
4 - विवस्वान के पुत्र वैवस्वत मनु. (वैवस्वत मनु के समय जल प्रलय हुआ था,)
5 - वैवस्वतमनु के दस पुत्रों में से एक थे इक्ष्वाकु, (इक्ष्वाकु ने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया और इस प्रकार इक्ष्वाकु कुल की स्थापना की।)
6 - इक्ष्वाकु के पुत्र कुक्षि,
7 - कुक्षि के पुत्र विकुक्षि,
8 - विकुक्षि के पुत्र बाण,
9 - बाण के पुत्र अनरण्य,
10- अनरण्य के पुत्र पृथु,
11- पृथु के पुत्र त्रिशंकु,
12- त्रिशंकु के पुत्र धुंधुमार,
13- धुन्धुमार के पुत्र युवनाश्व,
14- युवनाश्व के पुत्र मान्धाता,
15- मान्धाता के पुत्र सुसन्धि,
16- सुसन्धि के दो पुत्र- ध्रुवसन्धि एवं प्रसेनजित,
17- ध्रुवसन्धि के पुत्र भरत,
18- भरत के पुत्र असित,
19- असित के पुत्र सगर,
20- सगर के पुत्र असमंज,
21- असमंज के पुत्र अंशुमान,
22- अंशुमान के पुत्र दिलीप,
23- दिलीप के पुत्र भगीरथ, (भागीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था.)
24- भागीरथ के पुत्र ककुत्स्थ,
25- ककुत्स्थ के पुत्र रघु, (रघु के अत्यंत तेजस्वी और पराक्रमी नरेश होने के कारण उनके बाद इस वंश का नाम रघुवंश हो गया, तब से श्री राम के कुल को रघु कुल भी कहा जाता है।)
26- रघु के पुत्र प्रवृद्ध,

27- प्रवृद्ध के पुत्र शंखण,
28- शंखण के पुत्र सुदर्शन,
29- सुदर्शन के पुत्र अग्निवर्ण,
30- अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्रग,
31- शीघ्रग के पुत्र मरु,
32- मरु के पुत्र प्रशुश्रुक,
33- प्रशुश्रुक के पुत्र अम्बरीष,
34- अम्बरीष के पुत्र नहुष,
35- नहुष के पुत्र ययाति,
36- ययाति के पुत्र नाभाग,
37- नाभाग के पुत्र अज,
38- अज के पुत्र दशरथ,
39- दशरथ के चार पुत्र राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न हुए।

(इस प्रकार ब्रह्मा की उन्चासवी पीढ़ी में श्रीराम का जन्म हुआ।)

रामचरित मानस के कुछ रोचक तथ्य

1. लंका में राम जी = 111 दिन रहे।
2. लंका में सीताजी = 435 दिन रहीं।
3. मानस में श्लोक संख्या = 27 है।
4. मानस में चोपाई संख्या = 4608 है।
5. मानस में दोहा संख्या = 1074 है।
6. मानस में सोरठा संख्या = 207 है।
7. मानस में छन्द संख्या = 86 है।
8. सुग्रीव में बल था = 10000 हाथियों का।
9. सीता रानी बनीं = 33वर्ष की उम्र में।
10. मानस रचना के समय तुलसीदास की उम्र = 77 वर्ष थी।
11. पुष्पक विमान की चाल = 400 मील/घण्टा थी।
12. रामादल व रावण दल का युद्ध = 87 दिन चला।
13. राम रावण युद्ध = 32 दिन चला।
14. सेतु निर्माण = 5 दिन में हुआ।
15. नलनील के पिता = विश्वकर्मा जी हैं।
16. त्रिजटा के पिता = विभीषण हैं।
17. विश्वामित्र राम को ले गए =10 दिन के लिए।
18. राम ने रावण को सबसे पहले मारा था = 6 वर्ष की उम्र में।
19. रावण को जिन्दा किया = सुखेन बेद ने नाभि में अमृत रखकर।

भगवान शंकर ने सोने की लंका रावण को क्यों दी ?

छल-कपट से प्राप्त की गई वस्तु कभी स्थायी नहीं रहती उसका विनाश अवश्य होता है। रावण द्वारा छल से प्राप्त की गई सोने की लंका भी जल कर भस्म हो गई।

जानें, सोने की लंका किसने बनवाई और किसके शाप के कारण जल कर भस्म हुई? पार्वती जी को भी आश्चर्य हुआ कि मेरे पति भी कितने सरल हैं, जो उन्होंने मेरा ही दान कर दिया। ब्रह्मविद्या पार्वती को लेकर जब रावण चलने लगा तो वह सहायता के लिए भगवान श्रीहरि का ध्यान करने लगीं। रावण जैसे कपटी से निपटने के लिए श्रीहरि (श्रीकृष्ण) ही उपयुक्त हैं; क्योंकि वो बड़े छलिया हैं। कपटियों से कैसे निपटा जाता है अच्छी तरह से जानते हैं? राजाधिराज कुबेर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की धन-सम्पदा के स्वामी होने के साथ देवताओं के भी धनाध्यक्ष (भण्डारी, treasurer) हैं। संसार के गुप्त या प्रकट जितने भी वैभव हैं, उन सबके अधिष्ठाता देव कुबेर हैं। कुबेर नव- निधियों के भी स्वामी हैं। एक निधि भी अनन्त वैभव प्रदान करने वाली होती है; किन्तु कुबेर नव-निधियों के स्वामी हैं। पादकल्प में कुबेर विश्रवा मुनि व इडविडा के पुत्र हुए। इनकी दीर्घकालीन तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने इन्हें लोकपाल का पद, अक्षय निधियों का स्वामी, पुष्पक विमान व देवता का पद प्रदान किया। कुबेर ने अपने पिता विश्रवामुनि से कहा कि ब्रह्मा जी ने मुझे सब कुछ प्रदान कर दिया; परन्तु मेरे निवास के लिए कोई स्थान नहीं दिया है। इस पर इनके पिता ने दक्षिण समुद्र तट पर त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका नगरी कुबेर को प्रदान की। कुबेर ने कई जन्मों तक भगवान शंकर की पूजा-आराधना की। पादकल्प में जब ये विश्रवा मुनि के पुत्र हुए तब इन्होंने भगवान शंकर की विशेष आराधना की। भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर इन्हें उत्तर दिशा का आधिपत्य, अलकापुरी का राज्य, चैत्ररथ नामक दिव्य वन और एक दिव्य सभा प्रदान की। माता पार्वती की इन पर विशेष कृपा थी। भगवान शंकर ने कुबेर से कहा — 'तुमने अपने तप से मुझे जीत लिया है, अतः मेरा मित्र बनकर यहीं अलकापुरी में रहो।' इस प्रकार कुबेर भगवान शिव के भी घनिष्ठ मित्र हैं। एक बार कुबेर ने भगवान शंकर के पास जाकर कहा — 'मैं आपकी कोई सेवा करना चाहता हूं, मुझे कोई सेवा बताएं।' भगवान शंकर ने कहा — 'मेरे हृदय में तो श्रीराम बसते हैं, वही मेरा धन हैं। मुझे किसी वस्तु या सेवा की आवश्यकता नहीं है।' भगवान शंकर के मना करने पर कुबेर भण्डारी प्रतिदिन माता पार्वती से विनती करते — 'मां ! मेरी आप दोनों की सेवा करने की बहुत इच्छा है, कोई सेवा बताओ।' एक बार भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी भगवान शंकर और माता पार्वती से मिलने कैलाश पर्वत पर आए। ठंड के कारण लक्ष्मी जी ठिठुरने लगीं। सर्दी से बचने के लिए उन्हें पूरे कैलास पर्वत पर कोई स्थान नहीं मिला। तब लक्ष्मी जी ने माता पार्वती से पूछा — 'आप इस पर्वत पर कैसे जीवन व्यतीत करती हैं ?' इसके बाद माता पार्वती ने वैकुण्ठ धाम की यात्रा की, वहां के वैभव को देखकर पार्वती जी ने ठान लिया कि वे भी अपने और शंकर जी के लिए ऐसा ही महल निर्मित कराएंगी। अपनी इच्छा को उन्होने भगवान शिव के सम्मुख रखा; परंतु भगवान शंकर तो विरागी ठहरे, वे कुछ नहीं बोले। एक दिन माता पार्वती ने कुबेर से कहा — 'तुम्हारे पास बहुत संपत्ति है तो सोने का राजमहल (लंका) बनवा दो। मैं शंकर जी को मना कर उसमें ले आऊंगी।' कुबेर को बहुत प्रसन्नता हुई कि मेरी संपत्ति का उपयोग शिव-सेवा में होगा, मेरे द्वारा बनवाए गए राजमहल में भगवान शंकर माता पार्वती सहित विराजेंगे। कुबेर ने अपनी सारी संपत्ति लगा कर देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा से सोने का राजमहल बनवा दिया। जिसे देख कर सभी देवताओं को बड़ा आश्चर्य हुआ। भगवान शंकर ब्रह्म हैं तो माता पार्वती ब्रह्मविद्या हैं। ब्रह्म ब्रह्मविद्या के अधीन रहता है। भगवान शंकर को पार्वती जी अति प्रिय हैं। पार्वती जी जो कहती हैं, वही शंकर जी करते हैं। माता पार्वती ने शंकर जी से कहा— 'कुबेर ने बहुत परिश्रम और प्रेम से सोने का राजमहल बनवाया है, थोड़े दिन यदि हम वहां रहें तो इसमें क्या हर्ज है ? आप तो स्वयं आनंदस्वरूप हैं, आपको श्मशान में भी आनंद है, पेड़ की छाया में भी आनंद है, तो क्या राजमहल में आपको आनंद नहीं होगा ?' भगवान शंकर ने कहा — 'कुबेर ने राजमहल तो अच्छा बनवाया है; किंतु उसने अभी वास्तु-पूजा नहीं की है। वास्तु-पूजा किए बिना वहां हम कैसे रहेंगे ?' शंकर जी और पार्वती जी अभी ये सब बात कर ही रहे थे; उसी समय वहां रावण भगवान शंकर के पूजन के लिए आया। शंकर जी जानते थे कि रावण प्रकाण्ड विद्वान है; फिर भी उन्होंने रावण से पूछा — 'वास्तु-पूजन कराना है, तुम्हें वैदिक मंत्रों का ज्ञान है ?' रावण के 'हां' कहने पर भगवान शंकर यजमान बने और रावण पुरोहित बन गया और सोने के राजमहल का वास्तु-पूजन सानंद सम्पन्न हुआ। रावण बड़ा लोभी था। सोने का राजमहल देख कर उसकी नीयत बिगड़ गई और वह मन में सोचने लगा कि किसी तरह यह राजमहल मुझे मिल जाए। पूजन के बाद भगवान शंकर ने रावण से कहा — 'पुरोहित जी ! आपको जो उचित लगे, वह दक्षिणा मांग लो।' रावण ने कहा — 'मैं जो मांगू वो आप मुझे देंगे ?' भगवान शंकर ने कहा — मेरा नियम है कि मैं किसी से 'ना' नहीं कहता हूँ।' रावण ने कहा — 'महाराज ! यह जो सोने का राजमहल है, जिसका वास्तु-पूजन मैंने करवाया है, उसे आप दक्षिणा में मुझे दे दें।' यह सुन कर भगवान शंकर ने पार्वती जी से कहा — 'ब्राह्मण है, मांग रहा है। मांगना मरने के समान होता है। हम लोग सोने के राजमहल में रहें या कहीं क्या फर्क पड़ता है ? कोई गरीब राजमहल में रह कर सुखी होता है तो हम उसको देख कर ही सुखी हो जाएंगे।' भगवान शिव याचक (मांगने वाले) के लिए कल्पवृक्ष हैं। जैसे कल्पवृक्ष अपनी छाया में आए हुए व्यक्ति को अभीष्ट वस्तु प्रदान करता है, वैसे ही शिव के दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटता, वे उपासकों के समस्त अभाव दूर कर देते हैं और देते-देते अघाते भी नहीं हैं। औघड़दानी शिव के दान को देखकर लक्ष्मी जी ईर्ष्या करती है कि जो वस्तुएं वैकुण्ठ में भी दुर्लभ हैं, वे शंकर जी इन कंगालों को बांट रहे हैं। शंकर जी ने रावण से कहा—'चलो तुम्हें राजमहल दिया।' पार्वती जी को यह बात ठीक नहीं लगी। उन्होंने रावण को शाप देते हुए कहा — 'जिस सोने की लंका को तुमने दान में मांग लिया है, वह एक दिन जलकर भस्म हो जाएगी।' और सच में हनुमान जी ने सोने की लंका को जला कर भस्म कर दिया। सोने का राजमहल मिलने के बाद रावण की नीयत और बिगड़ गई। वह मन-ही-मन कहने लगा — 'ये तो बड़े भोले हैं, जो मांगों सो दे देते हैं।' रावण ने शंकर जी से कहा — 'महाराज ! दूसरा जो कुछ मांगूं, सो आप देंगे ?' शंकर जी के 'हां' कहने पर रावण ने कहा — 'ये पार्वती बहुत सुंदर हैं, इन्हें आप मुझे दे दो।' शंकर जी ने मुसकराते हुए कहा — 'मुझे तो विवाह करने की इच्छा ही नहीं थी, मैंने तो कामदेव को ही भस्म कर दिया था। भगवान नारायण की इच्छावश मैंने लग्न कर लिया था। तुझे पार्वती बहुत अच्छी लगती हैं तो तू ले जा।' भगवान शंकर के समान ऐसा उदार दानी कहां मिलेगा ? ऐसा दानी जो वरदान देकर स्वयं संकट में पड़ जाए। शिवजी ने प्रकृति के सारे नियम ही पलट दिए। पार्वती जी को भी आश्चर्य हुआ कि मेरे पति भी कितने सरल हैं, जो उन्होंने मेरा ही दान कर दिया। ब्रह्मविद्या पार्वती को लेकर जब रावण चलने लगा तो वे सहायता के लिए भगवान श्रीहरि का ध्यान करने लगीं। रावण जैसे कपटी से निपटने के लिए श्रीहरि (श्रीकृष्ण) ही उपयुक्त हैं; क्योंकि वो भी बड़े छलिया हैं। कपटियों से कैसे निपटा जाता है, वे अच्छी तरह से जानते हैं ? रावण को मार्ग में एक ग्वाला मिला। ग्वाले ने रावण को वंदन करके पूछा — 'आप तो बड़े वीर पुरुष हैं, किसी से हारे ही नहीं हैं; फिर ये किसको ले जा रहे हैं ?' अहंकारी रावण अपनी प्रशंसा से फूल गया और कहने लगा — 'शंकर जी ने मुझे सोने की लंका और ये ब्रह्मविद्या पार्वती दी है। इस पार्वती को पाकर मैं अमर हो जाऊंगा।' ग्वाले ने हंसते हुए कहा — 'यह पार्वती नहीं है, यह उनकी दासी होगी। शंकर जी तुम्हें अपनी पार्वती कैसे दे देंगे ? पार्वती जी की दासी देकर तुम्हें बहला दिया है। ब्रह्मविद्या माता पार्वती के श्रीअंग से तो कमल की गंध निकलती है; क्योंकि उनके अंग में मल-मूत्र, रुधिर-मांस नहीं है। तुम परीक्षा करो, यदि कमल की गंध न आए तो समझ लेना कि ये पार्वती जी की दासी हैं।' पार्वती जी ने अपने श्रीअंग से तीव्र दुर्गंध प्रकट कर दी। रावण की बुद्धि भ्रमित हो गई। उसने कहा — 'इनमें से कमल की सुगंध तो नहीं आ रही है, दुर्गंध आ रही है।' ग्वाले के वेश में श्रीहरि ने कहा — 'तब तो यह पार्वती की दासी है। वे पार्वती तुम्हें कैसे दे देंगे ? मैंने सुना है कि पार्वती जी को शंकर जी ने पाताल में रख दिया है। तुम इन्हें छोड़ दो।' रावण ग्वाले की बातों में आ गया और पार्वती जी को छोड़ करके चला गया। तब भगवान श्रीहरि ने वहां पार्वती जी की पूजा और स्थापना की। दक्षिण भारत में गोकर्ण महाबलेश्वर नामक स्थान है, जहां पर द्वैपायनी जगदम्बा पार्वती जी का मंदिर है।

किसानों व आढ़तियों के हितों की रक्षा के लिए सरकार प्रतिबद्ध : राज्य मंत्री राजेश नागर

मंडियों में व्यवस्थाएं दुरुस्त रखें अधिकारी, किसानों को न हो कोई परेशानी- बोले राज्य मंत्री

हरियाणा के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री श्री राजेश नागर ने अधिकारियों के साथ किया झज्जर व आसौदा मंडियों का निरीक्षण

- मंडियों में अधिकारियों के साथ गेहूं खरीद व्यवस्थाओं का लिया जायजा

झज्जर, 2 अप्रैल। हरियाणा के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री श्री राजेश नागर ने गुरुवार को जिला की झज्जर व आसौदा अनाज मंडी एवं खरीद केंद्र का दौरा कर रबी फसलों की खरीद व्यवस्थाओं का गहन निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। आसौदा खरीद केंद्र पर पहुंचने पर एसडीएम अभिनव सिवाच व भाजपा नेता दिनेश सेवा मूर्ति व किसानों ने राज्य मंत्री का स्वागत किया। वहीं झज्जर पहुंचने पर भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी व जिला परिषद के चैयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना ने स्वागत किया। इस बीच राज्य मंत्री श्री नागर ने मंडियों में किसानों व आढतियों से संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं और उन्हें आश्वस्त किया कि देश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी व प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में सरकार किसानों के हितों की रक्षा के लिए पूरी तरह सजग है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि किसी भी किसान को अपनी फसल बेचते समय किसी प्रकार की परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि किसानों की फसल का एक-एक दाना समय पर और उचित मूल्य पर खरीदा जाए तथा पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी, प्रभावी और किसान हितैषी बनाया जाए। इसके लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे मंडियों में लगातार मौजूद रहकर सभी व्यवस्थाओं की निगरानी करें।

एमएसपी पर फसल खरीद सुनिश्चित करने के निर्देश

इस अवसर पर खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री श्री राजेश नागर ने कहा कि इस बार सरकार द्वारा गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2585 रुपये प्रति क्विंटल तथा सरसों का 6200 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य समय पर मिले, यह सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि भुगतान प्रक्रिया में किसी प्रकार की देरी न हो और पूरी पारदर्शिता के साथ राशि सीधे किसानों के खातों में भेजी जाए।

मंडियों में जरूरी सुविधाओं का लिया जायजा, राज्य मंत्री ने दिए आवश्यक निर्देश

हरियाणा के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री श्री राजेश नागर ने निरीक्षण के दौरान साफ-सफाई, शैड, पेयजल, शौचालय, सीसीटीवी, मापतोल व्यवस्था, बायोमेट्रिक इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस, गेट पास, बारदाना उपलब्धता और फसल उठान जैसी व्यवस्थाओं की विस्तार से समीक्षा की गई। राज्य मंत्री ने निर्देश दिए कि मंडियों में सभी आवश्यक सुविधाएं बेहतर स्तर पर उपलब्ध करवाई जाएं, ताकि किसानों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

कंट्रोल रूम से हो रही खरीद प्रक्रिया की निगरानी

डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल ने राज्य मंत्री को बताया कि रबी फसलों की खरीद की प्रभावी मॉनिटरिंग के लिए मार्केटिंग बोर्ड कार्यालय में कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। यह कंट्रोल रूम जिले की सभी मंडियों में चल रही खरीद प्रक्रिया पर सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से लगातार नजर रखेगा। इससे पारदर्शिता बनी रहेगी और किसी भी प्रकार की अनियमितता पर तुरंत कार्रवाई संभव हो सकेगी।

यह अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति रहे मौजूद

इस अवसर पर मार्किट कमेटी झज्जर के चैयरमैन सतबीर सिंह, वाईस चेयरमैन जसबीर सिंह, सीए नितिन बंसल, जिला पार्षद रवि बराही, किसान अतर सिंह, सुरेंद्र प्रधान, के अलावा प्रशासन की ओर एसडीएम रवि मीणा, एसीपी प्रदीप कुमार, एसीपी अनिरुद्ध चौहान, हैफेड के जिला प्रबंधक कृष्ण श्योराण, वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन के डीएम रोहतास दहिया, सचिव मार्किट कमेटी रामनिवास सहित अन्य अधिकारीगण, आढती व किसान उपस्थित थे।

ज्ञान भारतम मिशन का होगा प्रभावी क्रियान्वयन : डीसी

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने अधिकारियों को जिला स्तर पर सर्वे, मॉनिटरिंग व समन्वय के दिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 02 अप्रैल। जिला में ज्ञान भारतम मिशन के अंतर्गत राष्ट्रीय पांडुलिपि सर्वे को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए जिला प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी हैं। इस मिशन के तहत प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण, दस्तावेजीकरण और राज्यभर में एक व्यापक डाटाबेस तैयार करने की दिशा में कार्य किया जाएगा।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने गुरुवार को वीसी उपरांत अधिकारियों को निर्देश दिए कि सर्वे कार्य को निर्धारित समयावधि में पूरा करने के लिए ठोस कार्य योजना बनाई जाए और सभी संबंधित संस्थानों की पहचान सुनिश्चित की जाए।

इस संबंध में मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी ने प्रदेश के सभी उपायुक्तों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिला अधिकारियों से कहा कि जिला स्तर पर सर्वे कार्य को गंभीरता से लेते हुए पुस्तकालयों, शैक्षणिक संस्थानों, धार्मिक स्थलों तथा निजी संग्रहों में मौजूद पांडुलिपियों की पहचान की जाए। उन्होंने फील्ड सर्वे, भौतिक सत्यापन और जियो-टैगिंग कार्य को निर्धारित मानकों के अनुरूप समयबद्ध तरीके से पूरा करने के निर्देश दिए।

उन्होंने बताया कि जिला स्तरीय समिति के माध्यम से कार्यों की निरंतर मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाएगी, ताकि मिशन का प्रभावी क्रियान्वयन हो सके।

डीसी ने कहा कि इस अभियान की सफलता के लिए विभिन्न विभागों के बीच बेहतर समन्वय और जन-जागरूकता बेहद आवश्यक है। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों, मीडिया तथा आमजन की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया।

बैठक में सीटीएम ऋचु बंसीवाल सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।निजी मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी सही दर्ज कर सबमिट अवश्य करें, ताकि भविष्य की सूचना समय पर प्राप्त हो सके।

अधिकारी समाधान शिविर की हर शिकायत का यथाशीघ्र करें उचित निपटारा : डीसी

हर शिकायत के तुरंत निपटारे के उद्देश्य से आयोजित किये जा रहे समाधान शिविर

झज्जर स्थित लघु सचिवालय सभागार में जिला स्तरीय समाधान शिविर आयोजित

झज्जर, 02 अप्रैल। जिला मुख्यालय स्थित लघु सचिवालय सभागार में गुरुवार को डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के मार्गदर्शन में जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर एडीसी जगनिवास ने आमजन की समस्याएं सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को अविलंब समाधान के निर्देश दिए। एडीसी ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविर में प्राप्त हर शिकायत का यथाशीघ्र उचित निपटारा सुनिश्चित करें। समाधान शिविर में हर विभाग से संबंधित हर शिकायत का एक छत के नीचे तुरंत निपटारा करने का लक्ष्य रखा गया है। इस दौरान लगभग आधा दर्जन शिकायतें दर्ज की गई हैं।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा हर सोमवार व गुरुवार को सुबह 10 से 12 बजे तक जिला मुख्यालय एवं बहादुरगढ़, बेरी व बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों का मुख्य उद्देश्य यही है कि आमजन की समस्याओं का समाधान उनके घर द्वार के नजदीक हो सके।

एडीसी ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविरों की शिकायतों का निपटारा करते समय संबंधित नागरिक से संवाद करें।

इस अवसर पर डीएफओ साहिती रेड्डी, सीटीएम रीतू बंसीवाल, एसीपी सुरेंद्र कंबोज, डीडीपीओ निशा तंवर, एक्सईन जन स्वास्थ्य विभाग अश्वनी सांगवान सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जनसहभागिता से मजबूत होगा स्थानीय वित्तीय ढांचा : डीसी

नागरिक गूगल फॉर्म के माध्यम से दे सकेंगे अपनी राय

झज्जर, 2 अप्रैल। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा 27 जून 2025 की अधिसूचना के तहत सातवें राज्य वित्त आयोग का गठन किया गया है। यह आयोग संविधान के अनुच्छेद 243-आई एवं 243-वाई, हरियाणा पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 213 तथा हरियाणा वित्त आयोग नियम, 1994 के अंतर्गत कार्य करते हुए राज्य में पंचायती राज संस्थाओं एवं शहरी स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करेगा।

डीसी ने बताया कि आयोग द्वारा पारदर्शी एवं सहभागी प्रक्रिया को अपनाते हुए आमजन, जनप्रतिनिधियों, संस्थानों, विषय विशेषज्ञों, संगठनों एवं अन्य हितधारकों से सुझाव आमंत्रित किए गए हैं। इसके लिए गूगल फॉर्म के माध्यम से सुझाव देने की व्यवस्था की गई है, ताकि अधिक से अधिक लोग अपनी राय सहजता से साझा कर सकें।

उन्होंने बताया कि शहरी स्थानीय निकायों से संबंधित सुझाव https://forms.gle/G5avsDt6QRGJtWLF8 लिंक के माध्यम से दिए जा सकते हैं, वहीं पंचायती राज संस्थाओं से संबंधित सुझाव https://forms.gle/7nhzH7TBGdbydTAn6 के लिए लिंक उपलब्ध है।

उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि गूगल फॉर्म लिंक को जिला की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रमुखता से प्रदर्शित किया जाए।

उन्होंने कहा कि वित्त आयोग का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों से व्यापक और सार्थक सुझाव प्राप्त करना है, ताकि आयोग की सिफारिशें व्यवहारिक, प्रभावी एवं स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो सकें।

डीसी ने आमजन से आह्वान किया कि वे अपने सुझाव देकर स्थानीय शासन व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाने में योगदान दें।

जनगणना कार्य में सटीकता व पारदर्शिता बेहद जरूरी : डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने लघु सचिवालय में जनगणना 2027 को लेकर चल रही तैयारियों की समीक्षा की

डिजिटल मोड में होने वाली जनगणना के लिए डीसी ने अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

झज्जर, 02 अप्रैल। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जनगणना देश की सबसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक प्रक्रिया है, जिसके आधार पर विकास योजनाओं का निर्माण और संसाधनों का उचित वितरण सुनिश्चित किया जाता है। इस बार जनगणना डिजिटल माध्यम से की जाएगी, इसलिए सभी अधिकारियों को तकनीकी पहलुओं की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है।

डीसी गुरुवार को जिला में होने वाली जनगणना 2027 को लेकर वीसी उपरांत अधिकारियों की बैठक में तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि जनगणना-2027 को डिजिटल मोड में सफलतापूर्वक संपन्न कराने के उद्देश्य से सभी तैयारियां समय से पहले पूरी कर ली जाएं।

उन्होंने कहा कि तहसीलदार व नगर निकायों के अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में जनगणना कार्य से जुड़े कार्यों को पूरा करना सुनिश्चित करें। और यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक अधिकारी व कर्मचारी डिजिटल एप्लिकेशन तथा निर्धारित प्रक्रिया से भली-भांति परिचित हो। उन्होंने निर्देश दिए कि जनगणना से संबंधित सभी तैयारियां निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाएं, ताकि आगामी प्रक्रिया सुचारू रूप से संचालित की जा सके।

डीसी ने कहा कि जनगणना कार्य में सटीकता और पारदर्शिता बनाए रखना अत्यंत जरूरी है। इसके लिए अधिकारियों को क्षेत्र स्तर पर निरंतर निगरानी रखनी होगी और किसी भी प्रकार की त्रुटि की संभावना को समाप्त करना होगा।

उन्होंने कहा कि गत माह जिला स्तर पर फील्ड ट्रेनर्स का प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा हो चुका है जिसमें मास्टर ट्रेनर द्वारा प्रशिक्षण दिया गया है जबकि 6 से 8 अप्रैल तक उपमंडल स्तर पर जनगणना कार्य में लगे स्टाफ को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

उन्होंने अधिकारियों को जनगणना-2027 की प्रक्रिया, डिजिटल डाटा संकलन प्रणाली, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अन्य प्रशासनिक व्यवस्थाओं को लेकर जरूरी निर्देश भी दिए।

16 अप्रैल से 30 अप्रैल तक चलेगी सेल्फ इन्यूमरेशन प्रक्रिया

उन्होंने बताया कि जनगणना 2027 के चलते आमजन 16से 30 अप्रैल तक घर बैठे ही सेल्फ इन्यूमरेशन कर सकते हैं। इसके लिए नागरिकों को se. census. gov. in पोर्टल पर जाना होगा। जिसके लिए मोबाइल नंबर से रजिस्ट्रेशन करना जरूरी है।

नागरिक सेल्फ इन्यूमरेशन के लिए

16 भाषाओं में से अपनी पसंद की भाषा चुन सकते हैं। फॉर्म में कुल 33 सवालों के जवाब देने होंगे। नागरिकों को घर और उसकी सुविधाओं से जुड़ी जानकारी भरनी होगी ,जिसमें मैप पर अपने घर की सटीक लोकेशन मार्क करना अनिवार्य है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि एक बार फॉर्म सबमिट होने के बाद बदलाव नहीं किया जा सकता। फॉर्म सबमिट करने के बाद OTP के जरिए वेरिफिकेशन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि SE ID आपके डेटा की पहचान के रूप में काम करेगा। गणनाकर्मी घर आने पर यही SE ID दिखानी होगी।

इस अवसर पर सीटीएम ऋचु बंसीवाल, सभी सेन्सस कलर्क व जिला प्रशासन के संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

झज्जर में एलपीजी गैस, पेट्रोल व डीजल की आपूर्ति पूरी तरह सामान्य : डीसी

किसी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान ना दें नागरिक

झज्जर, 02 अप्रैल। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिलावासियों से अपील की है कि घबराहट में ईंधन की अनावश्यक खरीदारी न करें। पर्याप्त भंडार उपलब्ध होने के कारण केवल आवश्यकता अनुसार ही खरीदारी करें, ताकि व्यवस्था सुचारू बनी रहे। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि ईंधन की कमी को लेकर अफवाह फैलाने, जमाखोरी या ब्लैक मार्केटिंग करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन द्वारा लगातार पेट्रोल पंपों व गैस एजेंसियों का निरीक्षण किया जा रहा है और सप्लाई चेन की निगरानी की जा रही है। डीसी ने कहा कि घरेलू गैस सिलेंडर का व्यावसायिक उपयोग करने वालों पर भी कार्रवाई होगी। गैस के मामले में आवश्यक सेवाओं को प्राथमिकता दी जा रही है।

उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। किसी भी समस्या के लिए 01251-254270 पर संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि जिला में 26 गैस एजेंसियां कार्यरत हैं। गुरुवार को एलपीजी गैस सिलेंडरों का कुल स्टॉक लगभग 9 हजार रहा, जबकि खपत 7500 की दर्ज की गई है। उन्होंने दोहराया है कि जिला में ईंधन की कोई कमी नहीं है और स्थिति पूरी तरह सामान्य है।

संसद प्रश्न में जैव प्रौद्योगिकी उद्योग के लक्ष्यों पर जोर, नवाचार और विकास पर फोकस

संगिनी घोष

संसद में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में सरकार ने जैव प्रौद्योगिकी उद्योग के प्रमुख लक्ष्यों को रेखांकित किया, जिसमें भारत को वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख बायोटेक हब बनाने की दिशा में रणनीति पर जोर दिया गया।

सरकार ने बताया कि जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जिसमें अनुसंधान, नवाचार और व्यावसायीकरण को बढ़ावा दिया जाएगा। इस क्षेत्र को मजबूत करने के लिए नीतिगत समर्थन और निवेश बढ़ाने पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

उद्योग विस्तार पर फोकस

लक्ष्यों में बायोटेक उद्योग के आकार को बढ़ाना, स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करना और स्वास्थ्य, कृषि व पर्यावरण क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देना शामिल है।

अनुसंधान और विकास को मजबूती

सरकार अनुसंधान संस्थानों को सशक्त बनाने और उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देकर वैज्ञानिक प्रगति को तेज करने पर जोर दे रही है।

स्टार्टअप और नवाचार को प्रोत्साहन

बायोटेक स्टार्टअप्स को फंडिंग, इन्क्यूबेशन और कौशल विकास के माध्यम से समर्थन दिया जा रहा है, ताकि युवा नवाचार को आगे बढ़ाया जा सके।

वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बढ़त

रणनीति का उद्देश्य भारत की वैश्विक स्थिति को मजबूत करना, निर्यात बढ़ाना और स्वदेशी तकनीकों को प्रोत्साहित करना है।

ऐसे देखें तो ये लक्ष्य जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र को नवाचार और आत्मनिर्भरता का प्रमुख आधार बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम हैं।

मुख्य बिंदु

* संसद में जैव प्रौद्योगिकी उद्योग के लक्ष्यों पर जानकारी
* विकास, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर जोर
* अनुसंधान और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की पहल
* स्टार्टअप्स और उद्यमिता को बढ़ावा
* निर्यात और स्वदेशी तकनीकों को प्रोत्साहन

SEO Meta Description:

संसद में सरकार ने जैव प्रौद्योगिकी उद्योग के लक्ष्यों को साझा किया, जिसमें नवाचार, स्टार्टअप्स और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर जोर दिया गया है।

ज्यूडिशियल काउंसिल ने कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की बढ़ी कीमत वापस लेने की मांग की।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली (न्यूज़ वार्ता) : ज्यूडिशियल काउंसिल ने वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में हाल ही में की गई भारी वृद्धि की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए इसे अनुचित, असंवेदनशील और छोटे व्यवसायों तथा आम नागरिक की आर्थिक स्थिरता के लिए अत्यंत हानिकारक बताया है।

अपने आधिकारिक वक्तव्य में ज्यूडिशियल काउंसिल के चेयरमैन श्री राजीव अग्निहोत्री ने कीमतों में मनमानी बढ़ोतरी पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इस निर्णय ने छोटे और मध्यम उद्यमों पर असहनीय वित्तीय बोझ डाल दिया है। इसमें रेहड़ी-पटरी वाले, ढाबा संचालक, रेस्टोरेंट और अनेक सेवा प्रदाता शामिल हैं, जो अपने दैनिक कार्यों के लिए एलपीजी पर अत्यधिक निर्भर हैं। ज्यूडिशियल काउंसिल ने जोर देकर कहा कि ये क्षेत्र जमीनी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और पहले से ही बढ़ती लागत और घटते मुनाफे से जूझ रहे हैं।

"श्री राजीव अग्निहोत्री ने कहा, कमर्शियल एलपीजी की कीमतों में अचानक और भारी वृद्धि मात्र एक नीतिगत निर्णय नहीं है—यह करोड़ों लोगों की आजीविका पर सीधा आघात है। ऐसे समय में जब व्यवसाय खुद को संभालने और बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं, आम नागरिकों पर बढ़ी कीमत थोपना उचित नहीं है।"

ज्यूडिशियल काउंसिल ने आगे चेतावनी दी कि इस मूल्य वृद्धि का व्यापक प्रभाव वस्तुओं और सेवाओं की लागत में वृद्धि के रूप में सामने आएगा, जिससे महंगाई बढ़ेगी और आम आदमी पर अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। काउंसिल के अनुसार, इस वृद्धि को लागू करने से पहले पर्याप्त सुरक्षा उपाय, राहत प्रावधान या हितधारकों से परामर्श का अभाव

निर्णय प्रक्रिया पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है।

इस कदम को "आर्थिक रूप से विघटनकारी और सामाजिक रूप से असंवेदनशील" बताते हुए ज्यूडिशियल काउंसिल ने कहा कि सभी नीतिगत निर्णयों में जनकल्याण सर्वोपरि होना चाहिए। काउंसिल ने यह भी रेखांकित किया कि जो भी कदम छोटे उद्यमियों और दैनिक मजदूरी करने वालों को असमान रूप से प्रभावित करता है, वह समावेशी विकास और आर्थिक न्याय के व्यापक उद्देश्य को कमजोर करता है।

इन चिंताओं के मद्देनज़र, ज्यूडिशियल काउंसिल ने कमर्शियल सिलेंडर की बढ़ी हुई कीमतों को तत्काल और बिना शर्त वापस लेने की सख्त मांग की है। साथ ही, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय से पारदर्शी, न्यायसंगत और स्थिर मूल्य निर्धारण प्रणाली लागू करने का आह्वान किया है, जिससे छोटे व्यवसायों को ईंधन लागत में बार-बार होने वाले उतार-चढ़ाव से सुरक्षा मिल सके।

"श्री अग्निहोत्री वर्तमान स्थिति असहनीय है। यदि तुरंत सुधारात्मक कदम नहीं उठाए गए, तो इससे व्यापक आर्थिक संकट, व्यवसायों का बंद होना और बड़े पैमाने पर आजीविका का नुकसान होगा,"

ज्यूडिशियल काउंसिल ने माननीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री से बिना विलंब हस्तक्षेप करने और राष्ट्रहित में निर्णायक कदम उठाने का आग्रह किया है। काउंसिल ने दोहराया कि शासन व्यवस्था को जवाबदेह, संवेदनशील और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए, विशेषकर उन लोगों के लिए जो अर्थव्यवस्था के हाशिये पर हैं।

अपने वक्तव्य के समापन में, ज्यूडिशियल काउंसिल ने आशा व्यक्त की कि सरकार इस गंभीर मुद्दे पर तत्परता और जिम्मेदारी के साथ कार्रवाई करेगी तथा एलपीजी जैसी आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वहनीयता, स्थिरता और जनविश्वास को बहाल करेगी।

हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर निकला 'बजरंग गर्जन यात्रा'

गोरखपुर। हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल के तत्वावधान में शहीद नगर चौरी चौरा में भव्य "बजरंग गर्जना यात्रा" का आयोजन किया गया। श्रद्धा, उत्साह और जयघोष से ओत-प्रोत यह यात्रा पूरे क्षेत्र में आकर्षण का केंद्र बनी रही। यात्रा का शुभारंभ राघोपुर से हुआ, जो भोपा बाजार होते हुए मुंडेरा बाजार स्थित गुड पड़ाव के प्राचीन हनुमान मंदिर पर विधिवत पूजन अर्चन के बाद समापन हुआ। पूरे मार्ग में श्रद्धालुओं ने "जय श्रीराम" और "बजरंगबली की जय" के गगनभेदी नारों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इस भव्य आयोजन की अध्यक्षता विश्व हिंदू परिषद के नगर अध्यक्ष अमित वर्मा ने की। इस अवसर पर प्रांत संगठन मंत्री दीपेश , प्रांत मंत्री नागेन्द्र , विभाग संगठन मंत्री निखिल , जिलाध्यक्ष अमरेंद्र , जिला मंत्री रंजीत , धर्मजागरण प्रमुख जयगोविंद सूर्या, कॉलेज विद्यार्थी प्रमुख आदित्य दबगर, प्रखंड अध्यक्ष जितेंद्र , प्रखंड मंत्री अंशु , संयोजक सागर , कुनाल , पंडित महामना फाउंडेशन ट्रस्ट के संस्थापक सचिन गौरी वर्मा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की विशेष आकर्षण झांकियां रहीं, जिसमें राम जी के रूप में रानी वर्मा, लक्ष्मण जी के रूप में खुशी, सीता जी के रूप में अंजली, भारत माता के रूप में आराध्य, रानी लक्ष्मीबाई के रूप में रिया एवं अंशिका तथा हनुमान जी के रूप में हिमांशु ने दर्शकों का मन मोह लिया। सैकड़ो श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने इस आयोजन को ऐतिहासिक बना दिया। पूरे क्षेत्र में भक्तिभाव, उत्साह और सामाजिक एकता का अद्भुत संगम देखने को मिला।

हनुमान जयंती पर बरवाला में 4 स्टार लाइब्रेरी का भव्य शुभारंभ

हवन-यज्ञ के साथ 4 स्टार लाइब्रेरी का उद्घाटन

हरियाणा हिसार : राजेश सलूजा

बरवाला के विराट नगर स्थित पंडित हजारीलाल सदन में आज हनुमान जयंती के पावन अवसर पर 4 स्टार लाइब्रेरी का भव्य उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर धार्मिक वातावरण के बीच हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोगों और श्रद्धालुओं ने आहुति डालकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

लाइब्रेरी का शुभारंभ हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के पूर्व सदस्य एवं दधीचि परमार्थ आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. हर्ष मोहन भारद्वाज के छोटे भाई पवन शर्मा की पुत्री एडवोकेट दीपांशा भारद्वाज ने किया। अपने संबोधन में डॉ हर्ष मोहन भारद्वाज ने कहा कि क्षेत्र के विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति बढ़ती रुचि और लगन को देखते हुए इस लाइब्रेरी की स्थापना की गई है।

उन्होंने कहा कि यह लाइब्रेरी उन छात्रों के लिए विशेष रूप से लाभकारी साबित होगी, जिनकी आर्थिक स्थिति उनके सपनों के आड़े आती रही है। यहां उन्हें शांत वातावरण, बेहतर संसाधन और मार्गदर्शन मिलेगा, जिससे वे अपने लक्ष्य को हासिल कर सकेंगे।

डॉ. भारद्वाज ने कहा कि शिक्षा ही वह माध्यम है, जो किसी भी समाज को आगे बढ़ाने का कार्य करता है। इस तरह की पहल से न केवल विद्यार्थियों को सुविधा मिलेगी, बल्कि पूरे क्षेत्र में शिक्षा का स्तर भी ऊंचा होगा।

कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के कई गणमान्य नागरिक, समाजसेवी और युवा बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सभी ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों और उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी शिक्षा से जुड़े ऐसे प्रयास जारी रखने का संकल्प लिया।

संकट मोचन श्रीहनुमान जन्मोत्सव पर न्यू आगरा थाना बना आस्था का केंद्र, हजारों श्रद्धालुओं ने लिया भंडारे का प्रसाद

थानाध्यक्ष योगेश कुमार के नेतृत्व में सजा भव्य आयोजन, भक्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुए धार्मिक अनुष्ठान

आगरा, संजय सागर सिंह। संकट मोचन श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर न्यू आगरा थाना परिसर आस्था और भक्ति का अद्भुत संगम बन गया। थानाध्यक्ष योगेश कुमार के नेतृत्व में थाना परिसर और मंदिर को सुगंधित फूलों एवं रंग-बिरंगे गुब्बारों से आकर्षक रूप से सजाया गया। इस अवसर पर सामाजिक सहयोग से एक विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर प्रसाद ग्रहण किया। थानाध्यक्ष योगेश कुमार ने बताया कि संकट मोचन श्री हनुमान जी की कृपा से यह आयोजन अत्यंत सफल रहा और इसमें शामिल भक्तों ने उत्सव का आनंद उठाया। पूरा वातावरण भक्ति और उल्लास से सराबोर रहा। संकट मोचन प्रभू सबका भला करें और सभी पर अपना आशीर्वाद बनाएं रखें।

समाजसेवी पंकज जैन ने जानकारी दी कि इस शुभ अवसर पर महंतजी द्वारा विधि-विधान से धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न कराए गए। अनुष्ठानों की दिव्यता और भव्यता ने उपस्थित श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आरती के दौरान पूरा परिसर 'जय श्री हनुमान' और 'जय सीता राम' के जयघोष से गूंज उठा, जिससे वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो गया।

कार्यक्रम में थाना अध्यक्ष एवं पुलिस कर्मियों की सक्रिय उपस्थिति ने आयोजन को और अधिक गरिमामय बना दिया। सभी ने मिलकर सेवा भाव से इस आयोजन को सफल बनाया। इस सेवा कार्य में शशांक अग्रवाल (मोनू), लक्की जैन, वरुण अग्रवाल, मोहक अग्रवाल, जीतू रावर सहित कई समाजसेवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

2 अप्रैल गुरुवार से शनि मंगल का बन रहा है विस्फोटक योग- ज्योतिर्विद मनीष भाटिया

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। 23 फरवरी 2026 से मंगल और राहु की युति से जो अंगारक योग बना हुआ था, 2अप्रैल 2026 से मंगल राहु का साथ छोड़कर, अब शनि के साथ वृहस्पति की मीन राशि में युति करने जा रहे हैं । यह युति 12 मई 2026 तक बनी रहेगी।

मंगल अग्नि तत्व के ग्रह है जो विस्फोट और युद्ध के कारक है। शनि वायु तत्व के ग्रह है, शनि की हवा मंगल की आग को और भयंकर बनाने का कार्य करेगी। वहीं 14 अप्रैल तक सूर्य भी जो अग्नि तत्व के ग्रह हैं, मंगल और शनि के साथ मे रहेंगे। चूँकि यह युति गुरु की जल प्रधान राशि, मीन राशि में हो रही है, इसलिए यहाँ आग, पानी, तेल और हवा का एक दुर्लभ संयोग बनेगा।

6 अप्रैल 2026 से 24 अप्रैल 2026 के बीच मंगल और शनि दोनों एक ही 'उत्तराभाद्रपद' नक्षत्र में गोचर करेंगे, उस समय यह स्थिति और भी संवेदनशील हो जाएगी। दो क्रूर एवं शत्रु ग्रहों का एक ही राशि के एक ही नक्षत्र बराबर डिग्री पर होना, वैश्विक शांति के लिए बहुत ही अशुभ योग है । इससे पूरी दुनिया में आक्रामकता बढ़ सकती है, आगजनी एवं विस्फोटक घटनाओं में बढ़ोतरी हो सकती है ।उर्जा,साहस, निर्णय क्षमता में बदलाव आयेगा । मिथुन - कन्या- तुला राशि लग्न का धैर्य कम हो सकता है चिड़चिड़ापन बढ सकता है।

जानते हैं कि 12 राशियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

मेष राशिः- आपको बहुत संभलकर चलना होगा। अनचाही यात्रा करनी पड़ सकती है जिससे थकान महसूस होगी। ये योग आपके 12वें भाव में बन रहा है। धन हानी के योग बनेंगे, खर्चों में बढ़ोतरी होगी। कोर्ट कचहरी मुकदमा में संभाल कर चलना होगा। चोट चपेट से बचना होगा तथा आंखों से संबंधित कोई परेशानी भी हो सकती है। मंगलवार का व्रत रखें तथा हनुमान चालीसा पढ़ने से लाभ होगा।

वृषभ राशिः- यह योग आपके 11वें भाव (लाभ स्थान) में बन रहा हैं। आय के नए स्रोत बनेंगे। कार्यों में सफलता एवं लाभ होगा। संतान संबंधी चिंताएं बनेगी।

मिथुन राशिः- आप के 10वें भाव (कर्म स्थान) में ग्रहों की यह युति नौकरी में अनचाहे तबादले, कार्यक्षेत्र में पॉलिटिक्स का शिकार बना सकती है। व्यापार में भी कोई बड़ा रिस्क न लें और अभी कोई भी निवेश न करें। मंगलवार को लाल मसूर की दाल का दान करें।

कर्क राशिः- आपके भाग्य स्थान में यह युति, पराक्रम से मिलेगी विजय। आपके लिए यह युति शुभ संकेत दे रही है। आपको भाग्य का साथ मिलेगा और आपकी मेहनत भी रंग

लाएगी। अधिकारियों के साथ संबंधों में कड़वाहट न आने दें तथा अपने पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मंगलवार का व्रत रखने से विशेष लाभ होगा।

सिंह राशिः- आपके अष्टम भाव में बन रहे इस योग के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होगा एवं कर्ज की स्थिति से भी बचना होगा। कार्यस्थल पर किसी भी वाद-विवाद से बचने का प्रयास करें, वरना स्थान परिवर्तन तथा नौकरी में कोई बड़ी परेशानी भी आ सकती है। सेहत को प्राथमिकता दें। सतर्कता ही बचाव है। शनिवार को पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाएं।

कन्या राशिः- इस यूपी के प्रभाव से आपके जीवनसाथी की सेहत प्रभावित हो सकती है तथा जीवनसाथी से मनमुताव की स्थिति भी उत्पन्न होने के योग्य है। परिवार में तथा रिश्तो में तकरार करने से बचें। मानसिक तनाव बढ़ेगा। हनुमान जी की पूजा करते रहे।

तुला राशिः- इस युति के प्रभाव आपके लिए शुभ रहेगा। शत्रु विरोधी सब परास्त होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी।

वृश्चिक राशिः- यह समय आपके लिए शुभ है। आपको अपनी भावुकता पर नियंत्रण रखना होगा। कार्य स्थल पर लाभ की स्थिति बनेगी। संतान संबंधी चिंताएं बनी रहेगी। पेट संबंधित रोग परेशान करेंगे। मंगलवार का व्रत एवं हनुमान जी की पूजा करने से लाभदायक स्थिति बनेगी।

धनु राशिः- वर्तमान समय में आपको घरेलू मोर्चे पर शांति बना कर रखना चाहिए। वाद विवाद से बचें। वाहन सावधानी से चलाएं। नौकरी व्यवसाय में कोई भी रिस्क ना लें तथा सावधानी पूर्वक कार्य करें। साझेदारी के कार्यों में सावधानी बरतें।

मकर राशिः- खूब मेहनत करें प्रयास करें तथा अपने कर्मों पर भरोसा रखे। मेहनत करने पर बहुत सफलता मिलेगी। प्रयासों में कमी ना आने दे। समय शुभ है, इसका सदुपयोग करें।

कुंभ राशिः- अपने शब्दों का चयन बहुत ही सोच-समझकर करें। इस गोचर के प्रभाव से आपकी बातों से विवाद पैदा हो सकता है। परिवार में विनम्र बने रहें। करियर के लिए समय अच्छा है और धन लाभ भी होगा, लेकिन हाथ से पैसा रेत की तरह फिसल सकता है।

मीन राशिः- अपना बहुत ख्याल रखें।

आपकी ही राशि, मीन राशि में यह युति उत्साह तो देगी, लेकिन इसे उन्माद न बनने दें। जीवन के बड़े फैसले बहुत सोच-समझकर ही लें। वाहन सावधानी से चलाएं. तथा चोट चपेट से बचें। लड़ाई झगड़ा एवं वाद विवादों से दूर रहने का प्रयास करें।

संभावित बड़ी वैश्विक घटनाएं :- समुद्री क्षेत्रों में संघर्ष की प्रबल संभावना है। दो देशों में चल रहा तालाब युद्ध में बदल सकता है। क्योंकि यह युति मीन राशि, जल तत्व की राशि में बन रही है। इसलिए समुद्री क्षेत्र में भी उथल-पुथल होने की संभावना है। समाज में असुरक्षा का भाव पैदा होगा। कई देशों में आंतरिक विद्रोह या उपद्रव जैसी स्थितियां बन सकती हैं। कई देशों में राजनेताओं को जन विरोध का सामना करना पड़ सकता है तथा सत्ता परिवर्तन के भी योग बन रहे हैं।

महंगाई बढ़ेगी, जिससे आम जनता की मुश्किलें बढ़ेंगी।

औद्योगिक क्षेत्र में भी भारी मंदी का खतरा मंडरा रहा है।कर्मचारियों की नौकरियों पर भी संकट आ सकता है, जिससे आर्थिक ढांचा कमजोर होगा।

हिंदी के संवर्धन, उत्कृष्ट साहित्य साधना पर काशी हिन्दी विद्यापीठ ने किया अलंकृत

डॉ. शंभु पंवार नई दिल्ली, 2 अप्रैल।

हिंदी साहित्य जगत के लिए एक अत्यंत गौरवपूर्ण क्षण उस समय साकार हुआ, जब प्रख्यात ग़ज़लकार, समाजसेवी एवं आकाशवाणी, दिल्ली के सहायक निदेशक रामअवतार बैरवा को काशी हिन्दी विद्यापीठ द्वारा मानद डॉक्टरेट उपाधि से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें राष्ट्रभाषा हिंदी के संवर्धन, साहित्य सृजन और समाज सेवा में उनके विशिष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। लखनऊ में आयोजित भव्य एवं गरिमामयी अलंकरण समारोह में बैरवा को यह प्रतिष्ठित उपाधि प्रदान की गई, जहां उनके बहुआयामी व्यक्तित्व और साहित्यिक साधना की विशेष सराहना की गई।

अपनी सादगी, सहजता और मधुर व्यवहार के लिए विख्यात रामअवतार बैरवा की शैक्षणिक यात्रा भी उतनी ही प्रेरणादायक है। 9 विषयों में स्नातकोत्तर, 3 विषयों में स्नातक, अनुवाद में डिप्लोमा तथा अनेक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम पूर्ण कर उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी एक मिसाल कायम की है। उनकी ग़ज़लें देशभर के प्रतिष्ठित मंचों और साहित्यिक महफिलों में श्रोताओं के हृदय को स्पर्श करती रही हैं। सम्मान प्राप्ति पर भावुक होते हुए बैरवा ने कहा कि यह उपाधि उनके लिए केवल सम्मान नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य और समाज सेवा के प्रति और अधिक समर्पण के साथ कार्य करने की प्रेरणा है।

उनकी इस उपलब्धि पर प्रख्यात साहित्यकार एवं उद्योगपति डॉ. बी.एल. गौड़, हरीश नवल, डॉ. सविता चड्ढा, वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, लेखक एवं पत्रकार-विचारक डॉ. शंभु पंवार, गीतांजलि काव्य प्रसार मंच की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा, रामकिशोर उपाध्याय, डॉ.पुष्पा जोशी, प्रणीत कुमार, वीणा अग्रवाल, डॉ.उपासना दीक्षित सहित देशभर के अनेक साहित्यकारों एवं संस्थाओं ने हर्ष व्यक्त करते हुए शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। यह सम्मान न केवल एक साहित्यकार की उपलब्धि है, बल्कि हिंदी भाषा, संस्कृति और सृजनशीलता के सम्मान का प्रतीक भी है।

कमीशन लेकर किताबें बेच रहे प्राइवेट स्कूल

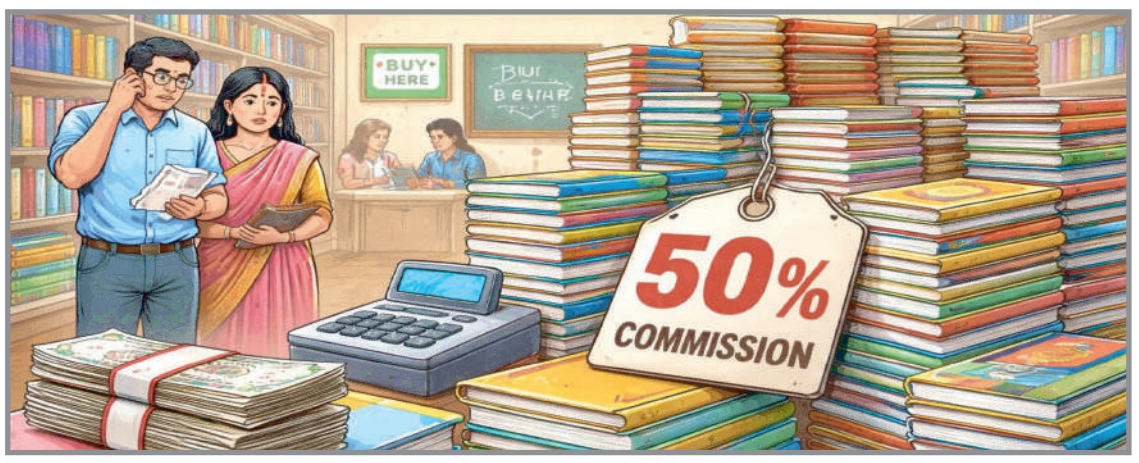

● डॉ. सत्यवान सौरभ

कई निजी विद्यालय अभिभावकों को यह निर्देश देते हैं कि वे केवल स्कूल द्वारा निर्धारित दुकानों से ही किताबें खरीदें या सीधे स्कूल परिसर से किताबें लें। यह स्थिति एक प्रकार का एकाधिकार (मोनोपॉली) पैदा करती है, जहां अभिभावकों के पास कोई विकल्प नहीं बचता। खुले बाजार में उपलब्ध सस्ती या वैकल्पिक पुस्तकों को खरीदने की स्वतंत्रता उनसे छीन ली जाती है। परिणामस्वरूप, उन्हें मजबूरी में अधिक कीमत चुकानी पड़ती है, जिसमें एक बड़ा हिस्सा कमीशन के रूप में शामिल होता है।

शिक्षा को सदैव समाज की आत्मा, विकास का आधार और समान अवसरों का सेतु माना गया है। यह केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक के निर्माण की प्रक्रिया भी है। परंतु जब यही शिक्षा लाभ कमाने का साधन बन जाए, तो यह चिंता का विषय ही नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के लिए एक गंभीर चेतावनी बन जाती है। हाल ही में सामने आई खबर कि कुछ निजी विद्यालय 50 प्रतिशत तक कमीशन लेकर किताबें बेच रहे हैं, इस चिंता को और अधिक गहरा करती है। यह केवल एक प्रशासनिक अनियमितता नहीं, बल्कि शिक्षा के मूल स्वरूप पर सीधा आघात है।

आज शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। निजी स्कूलों की संख्या बढ़ी है, प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, और साथ ही बढ़ा है शिक्षा का खर्च। लेकिन इस बढ़ते खर्च के पीछे यदि गुणवत्ता, बेहतर सुविधाएं और आधुनिक संसाधन हों, तो इसे एक हद तक उचित ठहराया जा सकता है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब शिक्षा के नाम पर अभिभावकों को अनावश्यक आर्थिक बोझ के नीचे दबाया जाने लगे। किताबों के नाम पर लिया जा रहा भारी कमीशन इसी प्रवृत्ति का एक उदाहरण है।

कई निजी विद्यालय अभिभावकों को यह निर्देश देते हैं कि वे केवल स्कूल द्वारा निर्धारित दुकानों से ही किताबें खरीदें या सीधे स्कूल परिसर से किताबें लें। यह स्थिति एक प्रकार का एकाधिकार (मोनोपॉली) पैदा करती है, जहां अभिभावकों के पास कोई विकल्प नहीं बचता। खुले बाजार में उपलब्ध सस्ती या वैकल्पिक पुस्तकों को खरीदने की स्वतंत्रता उनसे छीन ली जाती है। परिणामस्वरूप, उन्हें मजबूरी में अधिक कीमत चुकानी पड़ती है, जिसमें एक बड़ा हिस्सा कमीशन के रूप में शामिल होता है।

इस पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता का भी घोर अभाव है। अभिभावकों को यह नहीं बताया जाता कि किन आधारों पर इन पुस्तकों का चयन किया गया है, उनकी वास्तविक कीमत क्या है, और उन पर कितना अतिरिक्त लाभ जोड़ा गया है। कई बार तो यह भी देखा गया है कि एक ही विषय की पुस्तक हर वर्ष बदल दी जाती है, ताकि पुरानी किताबें किसी काम की न रहें और नई किताबें खरीदने के लिए अभिभावक बाध्य हों। यह प्रवृत्ति न केवल आर्थिक शोषण को बढ़ावा देती है, बल्कि संसाधनों की अनावश्यक बर्बादी भी करती है।

यह स्थिति केवल आर्थिक दृष्टि से ही चिंताजनक नहीं है, बल्कि यह शिक्षा के मूल उद्देश्य को भी कमजोर करती है। जब विद्यालय ज्ञान के केंद्र के बजाय लाभ कमाने के साधन बन जाते हैं, तो शिक्षा का मूल्य स्वतः ही गिरने लगता है। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच का संबंध, जो कभी विश्वास और मार्गदर्शन पर आधारित होता था, धीरे-धीरे एक औपचारिक लेन-देन में बदलने लगता है। बच्चों के समग्र विकास की जगह संस्थान का आर्थिक लाभ प्राथमिकता बन जाता है।

अभिभावकों की स्थिति इस पूरे परिदृश्य में सबसे अधिक दयनीय हो जाती है। वे अपने बच्चों के भविष्य के लिए सर्वोत्तम शिक्षा चाहते हैं, लेकिन उन्हें बार-बार आर्थिक दबाव का सामना करना पड़ता है। मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय परिवारों के लिए यह बोझ और भी अधिक भारी हो जाता है। कई बार वे अपनी अन्य आवश्यकताओं में कटौती करके इन खर्चों को पूरा करते हैं। यह स्थिति सामाजिक असमानता को भी बढ़ावा देती है, जहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल उन लोगों तक सीमित होती जा रही है, जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं।

इस पूरे मुद्दे का एक और महत्वपूर्ण पहलू है—सिलेबस में बार-बार होने वाला बदलाव। हर वर्ष या दो वर्ष में पाठ्यक्रम में छोटे-मोटे बदलाव कर दिए जाते हैं, जिससे पुरानी किताबें अप्रासंगिक हो जाती हैं। यह बदलाव अक्सर शैक्षणिक आवश्यकता से अधिक व्यावसायिक हितों से प्रेरित प्रतीत होता है। यदि पाठ्यक्रम में वास्तव में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ है, तो केवल किताबों के संस्करण बदलना और नई किताबें अनिवार्य करना कहीं न कहीं संदेह पैदा करता है।

सबसे चिंताजनक पहलू है—शिक्षा विभाग की निष्क्रियता। नियम स्पष्ट रूप से कहते हैं कि कोई भी स्कूल अभिभावकों को किसी विशेष दुकान से किताबें खरीदने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। इसके बावजूद, यह प्रथा खुलेआम जारी है। इसका अर्थ यह है कि या तो नियमों का पालन नहीं हो रहा, या फिर उनके पालन को सुनिश्चित करने की इच्छाशक्ति का अभाव है। यह खामोशी कहीं न कहीं इस व्यवस्था को मौन स्वीकृति देती प्रतीत होती है।

यह भी आवश्यक है कि हम इस समस्या को केवल आलोचना तक सीमित न रखें, बल्कि इसके समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाने की बात करें। सबसे पहले, शिक्षा विभाग को इस पूरे मामले की गंभीरता से जांच करनी चाहिए और दोषी पाए जाने वाले संस्थानों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। केवल चेतावनी या औपचारिक नोटिस पर्याप्त नहीं होंगे; आवश्यक है कि ऐसे मामलों में दंडात्मक कार्रवाई भी हो, ताकि एक स्पष्ट संदेश जाए।

दूसरे, किताबों की बिक्री में पारदर्शिता सुनिश्चित की जानी चाहिए। स्कूलों को यह स्पष्ट करना चाहिए कि वे कौन-सी किताबें क्यों निर्धारित कर रहे हैं और उनकी कीमत क्या है। यदि संभव हो, तो सभी किताबों की सूची ऑनलाइन उपलब्ध कराई जाए, ताकि अभिभावक कहीं से भी उन्हें खरीद सकें। इससे एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी बनी रहेगी और कीमतों में अनावश्यक वृद्धि पर रोक लगेगी।

तीसरे, सिलेबस में बार-बार होने वाले अनावश्यक बदलावों पर भी नियंत्रण होना चाहिए। यदि पाठ्यक्रम में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं है, तो किताबों को बार-बार बदलने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। इससे न केवल अभिभावकों का आर्थिक बोझ कम होगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान मिलेगा।

चौथे, अभिभावकों को भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा। वे यदि संगठित होकर अपनी बात रखते हैं, तो इस प्रकार की प्रथाओं पर अंकुश लगाया जा सकता है। समाज के अन्य वर्गों, जैसे सामाजिक संगठनों और मीडिया को भी इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाना चाहिए।

अंततः, हमें यह समझना होगा कि शिक्षा कोई वस्तु नहीं है, जिसे मुनाफे के लिए बेचा जाए। यह एक सामाजिक दायित्व है, जो आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को निर्धारित करता है। यदि इस क्षेत्र में अनियंत्रित व्यावसायीकरण को बढ़ावा दिया गया, तो इसका दुष्प्रभाव केवल वर्तमान पर ही नहीं, बल्कि आने वाले समय पर भी पड़ेगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा को उसके मूल उद्देश्य की ओर लौटाया जाए—ज्ञान, संस्कार और समान अवसर। यदि हम इस दिशा में समय रहते कदम नहीं उठाते, तो वह दिन दूर नहीं जब शिक्षा पूरी तरह एक व्यापार बन जाएगी, जहां किताबों के पन्नों में ज्ञान नहीं, बल्कि केवल लाभ-हानि का हिसाब लिखा होगा।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक है।)

अधिकार बनाम हकीकत: क्या सच में मुफ्त हैं शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय?

डॉ विजय गर्ग

समाज की प्रगति का सबसे सशक्त आधार उसके नागरिकों की शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय तक समान पहुँच है। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह केवल सुविधाएँ नहीं, बल्कि मौलिक अधिकार माने जाते हैं। परंतु सवाल यह है कि क्या ये अधिकार वास्तव में हर व्यक्ति तक पहुँच रहे हैं, या फिर ये केवल नीतियों और भाषणों तक सीमित एक सपना बनकर रह गए हैं?

शिक्षा: अधिकार से अवसर तक

शिक्षा को मानव विकास का प्रथम चरण माना जाता है। भारत में शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE) के तहत 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिया गया है। कागज़ों पर यह व्यवस्था सशक्त दिखाई देती है, लेकिन वास्तविकता में कई सरकारी स्कूलों में संसाधनों की कमी, शिक्षकों का अभाव और गुणवत्ता का सवाल आज भी बना हुआ है।

दूसरी ओर, निजी विद्यालयों की बढ़ती फीस गरीब और मध्यम वर्ग के लिए बड़ी चुनौती बन चुकी है। ऐसे में "मुफ्त शिक्षा" का अधिकार केवल नाम मात्र का प्रतीत होता है।

स्वास्थ्य: सुविधा या संघर्ष?

स्वास्थ्य सेवाएँ किसी भी राष्ट्र की प्राथमिक जिम्मेदारी होती हैं। भारत में आयुष्मान भारत योजना जैसी योजनाएँ गरीबों को मुफ्त इलाज का भरोसा देती हैं।

फिर भी, सरकारी अस्पतालों में लंबी कतारें, डॉक्टरों की कमी और बुनियादी सुविधाओं का अभाव लोगों को निजी अस्पतालों की ओर धकेल देता है, जहाँ इलाज अत्यंत महंगा होता है।

इस प्रकार, मुफ्त स्वास्थ्य सेवा का सपना कई बार वास्तविकता से दूर नजर आता है।

न्याय: समानता का आधार

न्याय व्यवस्था का उद्देश्य हर नागरिक को समान और निष्पक्ष न्याय देना है। भारत में गरीबों के लिए मुफ्त कानूनी सहायता उपलब्ध कराने हेतु राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) जैसी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं।

इसके बावजूद, अदालतों में लंबित मामलों का बोझ, न्याय प्रक्रिया की जटिलता और समय की लंबी अवधि आम नागरिक के लिए न्याय को कठिन बना देती है।

"विलंबित न्याय, न्याय से वंचित करना है" — यह कहावत आज भी हमारे न्याय तंत्र की चुनौतियों को उजागर करती है।

सपना और सच्चाई के बीच की दूरी

मुफ्त शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय का विचार एक आदर्श समाज की परिकल्पना करता है, जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर मिले। परंतु वास्तविकता में इन सेवाओं की गुणवत्ता, पहुँच और प्रभावशीलता में कई बाधाएँ हैं।

नीतियाँ बनाना आसान है, लेकिन उन्हें जमीनी स्तर पर लागू करना सबसे बड़ी चुनौती है।

समाधान की दिशा

इन अधिकारों को केवल सपना न रहने देने के लिए आवश्यक है कि—

सरकारी संस्थाओं में निवेश और सुधार किया जाए

पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जाए

तकनीक का उपयोग कर सेवाओं को अधिक सुलभ बनाया जाए

समाज में जागरूकता बढ़ाई जाए ताकि लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हों

निष्कर्ष

मुफ्त शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय केवल एक सपना नहीं, बल्कि हर नागरिक का अधिकार है। यह सरकार, समाज और नागरिकों की संयुक्त जिम्मेदारी है कि इन अधिकारों को वास्तविकता में बदला जाए।

जब तक इन सेवाओं की गुणवत्ता और पहुँच में सुधार नहीं होगा, तब तक यह सवाल बना रहेगा—क्या ये हक़ हैं या केवल एक अधूरा सपना?

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त

"मैं न होता, तो क्या होता—अहंकार से समर्पण तक का सुंदर संदेश"

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में ऐसे अनेक प्रसंग मिलते हैं, जो केवल कथा नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शन बन जाते हैं। सुंदरकांड का एक अत्यंत मार्मिक प्रसंग हमें यह सिखाता है कि मनुष्य चाहे जितना भी समर्थ क्यों न हो जाए, वह केवल निमित्त मात्र है, कर्ता नहीं।

अशोक वाटिका में जब रावण क्रोध से उन्मत्त होकर तलवार लेकर माता सीता की ओर बढ़ता है, तब एक क्षण के लिए हनुमानजी के मन में विचार आता है कि अभी जाकर उसकी तलवार छीन ली जाए और उसका अंत कर दिया जाए। यह भाव स्वाभाविक था, क्योंकि वे शक्ति और पराक्रम के प्रतीक हैं। किन्तु उसी क्षण उन्होंने देखा कि मंदोदरी ने रावण का हाथ पकड़ लिया और उसे रोक दिया।

यह दृश्य हनुमानजी के लिए एक गहरा संदेश लेकर आया। वे भावविभोर हो उठे और उनके मन में यह विचार आया कि यदि वे आगे बढ़ जाते, तो उन्हें यह भ्रम हो जाता कि सीता माता की रक्षा उन्होंने की। परंतु प्रभु ने यह कार्य रावण की पत्नी से ही करा दिया। उसी क्षण उन्हें यह बोध हुआ कि इस संसार में हर कार्य प्रभु की इच्छा से होता है, और वह जिस किसी से जो कार्य लेना चाहते हैं, उसी से ले लेते हैं।

यह प्रसंग केवल एक घटना नहीं, बल्कि हमारे जीवन का दर्पण है। अक्सर मनुष्य अपने छोटे-छोटे कार्यों में भी यह सोच बैठता है कि यदि वह न होता, तो कुछ भी संभव नहीं होता। यही अहंकार धीरे-धीरे मन को घेर लेता है और व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है।

आगे का प्रसंग और भी अद्भुत है। जब त्रिजटा स्वप्न में देखती है कि एक वानर लंका को जला रहा है, तो यह सुनकर हनुमानजी स्वयं चिंतित हो जाते हैं। उन्हें स्मरण आता है कि प्रभु ने उन्हें लंका जलाने का कोई आदेश नहीं दिया है। वे दुविधा में पड़ जाते हैं कि क्या करना उचित होगा।

इसी बीच रावण के सैनिक उन्हें मारने के लिए दौड़ते हैं, परंतु हनुमानजी अपने बचाव का कोई प्रयास नहीं करते। तभी विभीषण आकर कहते हैं कि दूत का वध नीति के विरुद्ध है। हनुमानजी समझ जाते हैं कि यह भी प्रभु की ही योजना है, जो उन्हें बचाने के लिए विभीषण के माध्यम से कार्य कर रही है।

चरम आश्चर्य तब होता है, जब रावण यह आदेश देता है कि हनुमानजी को मारा न जाए, बल्कि उनकी पूंछ में कपड़ा लपेटकर उसमें घी डालकर आग लगा दी जाए। यह सुनकर हनुमानजी के मन में एक अद्भुत भाव आता है। वे सोचते हैं कि यदि लंका जलानी है, तो यह सारी व्यवस्था स्वयं प्रभु ने रावण से ही करवा दी—घी, कपड़ा और अग्नि सब कुछ।

यहां एक गहरी सीख छिपी है। जिस रावण को हम विरोधी मानते हैं, वही प्रभु की योजना का एक माध्यम बन जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ईश्वर की योजना में कोई भी व्यर्थ नहीं है। हर व्यक्ति, हर परिस्थिति और हर घटना एक बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए घटित होती है।

आज के समय में जब व्यक्ति अपनी उपलब्धियों पर गर्व करता है, तब यह प्रसंग हमें विनम्रता का पाठ पढ़ाता है। हम जो भी करते हैं, वह हमारी क्षमता का परिणाम नहीं, बल्कि ईश्वर की कृपा का प्रसाद है। हम केवल माध्यम हैं, कर्ता नहीं।

"मैं न होता, तो क्या होता"—यह विचार ही हमारे भीतर के अहंकार को जन्म देता है। जबकि सत्य यह है कि संसार का संचालन किसी एक व्यक्ति के सहारे नहीं, बल्कि ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार होता है।

जब यह भाव मन में स्थिर हो जाता है, तब व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल जाता है। वह हर सफलता को अपनी नहीं, बल्कि ईश्वर की देन मानता है और हर असफलता को एक सीख के रूप में स्वीकार करता है।

अंततः यही निष्कर्ष निकलता है कि जीवन में समर्पण ही सबसे बड़ी शक्ति है। जब मनुष्य अपने अहंकार को त्यागकर स्वयं को ईश्वर का दास मान लेता है, तब उसका जीवन सरल, शांत और संतुलित हो जाता है।

ना मैं श्रेष्ठ हूँ,
ना ही मैं विशेष हूँ,
मैं तो बस एक साधारण सा,
ईश्वर का सेवक हूँ।

यही भावना मनुष्य को अहंकार से मुक्त कर, सच्चे आनंद और शांति की ओर ले जाती है।

अजय कुमार बियानी सेवानिवृत्त अभियंता

पहचान और समाज: बदलाव की कहानी

डॉ विजय गर्ग

समाज स्थिर नहीं होता, वह समय के साथ बदलता रहता है। इसी परिवर्तन के साथ मनुष्य की पहचान भी निरंतर रूपांतरित होती है। आज का युग वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सामाजिक जागरूकता का युग है, जहाँ व्यक्ति अपनी पहचान को नए संदर्भों में परिभाषित कर रहा है। "बदलती पहचान, बदलता समाज" केवल एक विचार नहीं, बल्कि हमारे समय की सच्चाई है।

पहचान पहले सीमित दायरों में बंधी होती थी—जैसे जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र। व्यक्ति की पहचान उसके जन्म से निर्धारित हो जाती थी। लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल रही हैं। शिक्षा, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने व्यक्ति को अपनी सोच और पहचान को व्यक्त करने का मंच दिया है। अब व्यक्ति अपनी रुचियों, कौशल, विचारों और उपलब्धियों के आधार पर पहचाना जाने लगा है।

तकनीकी क्रांति ने इस बदलाव को और तेज किया है। डिजिटल दुनिया ने भौगोलिक सीमाओं को मिटा दिया है। आज एक छोटे गाँव का युवक भी वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना सकता है। ऑनलाइन शिक्षा, फ्रीलांसिंग और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। इससे समाज में अवसरों की समानता बढ़ी है, लेकिन साथ ही प्रतिस्पर्धा भी तीव्र हुई है।

महिलाओं की बदलती पहचान भी इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पहले महिलाओं की भूमिका घर तक सीमित मानी जाती थी, लेकिन आज वे हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं—चाहे वह शिक्षा हो, विज्ञान, राजनीति या खेल। यह बदलाव समाज के दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन को दर्शाता है।

हालाँकि, यह परिवर्तन केवल सकारात्मक ही नहीं है। बदलती पहचान के साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण, पारिवारिक संबंधों में दूरी और सामाजिक असमानताएँ आज भी चिंता का विषय हैं। कई बार आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं।

इसलिए आवश्यक है कि हम इस परिवर्तन को संतुलित दृष्टिकोण से देखें। हमें आधुनिकता को अपनाते हुए अपनी परंपराओं और मूल्यों को भी संजोकर रखना चाहिए। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से समाज को इस दिशा में मार्गदर्शन देना होगा।

अंततः, बदलती पहचान समाज के विकास का संकेत है। यह हमें नए अवसर देती है, नई सोच प्रदान करती है और हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यदि हम इस परिवर्तन को सही दिशा में ले जाएँ, तो यह एक अधिक समावेशी, जागरूक और प्रगतिशील समाज का निर्माण कर सकता है।

केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल विधेयक पर विपक्ष का विरोध-आशंकाएं-वास्तविकता

सौरभ वार्ष्णेय

भारत में केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल देश की आंतरिक सुरक्षा की रीढ़ माने जाते हैं। सीमाओं की सुरक्षा से लेकर नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांति बहाली और आपदा प्रबंधन तक, इन बलों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। ऐसे में जब भी इनके ढांचे, सेवा शर्तों या अधिकारों से जुड़ा कोई नया विधेयक या सुधार प्रस्ताव सामने आता है, तो स्वाभाविक रूप से व्यापक चर्चा होती है। लेकिन हाल के समय में देखा गया है कि विपक्ष इन प्रस्तावों का मुखर विरोध कर रहा है। यह विरोध किन कारणों से प्रेरित है, इसे समझना जरूरी है।

सबसे पहली चिंता संघीय ढांचे (फेडरल स्ट्रक्चर) को लेकर है। विपक्ष का आरोप है कि केंद्र सरकार केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) के माध्यम से राज्यों के अधिकारों में हस्तक्षेप बढ़ा सकती है। यदि किसी विधेयक में बलों को अधिक स्वायत्तता या सीधे हस्तक्षेप के अधिकार दिए जाते हैं, तो यह राज्यों की कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी को कमजोर कर सकता है। यही कारण है कि कई विपक्षी दल इसे राज्यों के अधिकारों पर अतिक्रमण के रूप में देखते हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण मुद्दा बलों के कर्मियों के अधिकारों और कल्याण से जुड़ा है। विपक्ष का कहना है कि सरकार सुधार के नाम पर अनुशासन और नियंत्रण को तो मजबूत कर रही है, लेकिन जवानों की समस्याओं—जैसे लंबी ड्यूटी, मानसिक तनाव, वेतन विसंगतियां और पेंशन—पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा। यदि किसी विधेयक में इन मुद्दों का संतुलित समाधान नहीं होता, तो उसका विरोध स्वाभाविक है।

तीसरा पहलू राजनीतिक दुरुपयोग की आशंका है। विपक्ष को डर है कि सीएपीएफ का इस्तेमाल राजनीतिक विरोध को दबाने या चुनावी लाभ के लिए किया जा सकता है। भारत जैसे लोकतंत्र में सुरक्षा बलों की निष्पक्षता अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए किसी भी ऐसे प्रावधान पर सवाल उठना लाजिमी है जो इस निष्पक्षता को प्रभावित कर सकता है।

हालांकि, यह भी सच है कि कई बार विरोध का कारण केवल नीतिगत असहमति नहीं, बल्कि राजनीतिक रणनीति भी होती है। संसद में सरकार को घेरने और जनमत को प्रभावित करने के लिए विपक्ष अक्सर ऐसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाता है। इससे बहस तो होती है, लेकिन कई बार सार्थक समाधान पीछे छूट जाते हैं। इस पूरे परिदृश्य में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सीएपीएफ जैसे संवेदनशील विषय पर निर्णय लेते समय संतुलन और पारदर्शिता बनाए रखी जाए। सरकार को चाहिए कि वह सभी हितधारकों—राज्यों, सुरक्षा विशेषज्ञों और स्वयं बलों के कर्मियों—से व्यापक संवाद करे। वहीं विपक्ष को भी केवल विरोध तक सीमित न रहकर रचनात्मक सुझाव देने चाहिए। सुरक्षा और लोकतंत्र दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना ही सबसे बड़ी चुनौती है। केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) सुधारों पर सहमति और संवाद का रास्ता ही देशहित में सबसे उपयुक्त साबित होगा।

केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल विधेयकसुरक्षा और संतुलन की परीक्षा

भारत की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था में केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) — जैसे (सीआरपीएफ), (बीएफएफ), (आईटीबीपी), (सीआईएसएफ) और (एसएसबी) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। सीमाओं की रक्षा से लेकर नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांति बनाए रखने तक, इन बलों ने लगातार चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में देश की सेवा की है। ऐसे में केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल विधेयकइ का प्रस्ताव न केवल प्रशासनिक सुधार का विषय है, बल्कि यह देश की सुरक्षा संरचना को आधुनिक बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम भी माना जा रहा है।

इस विधेयक का मूल उद्देश्य (सीएपीएफ) के कार्य, अधिकार और जवाबदेही को एक समान कानूनी ढांचे में लाना है। वर्तमान में अलग-अलग बलों के लिए अलग-अलग कानून और नियम हैं, जिससे समन्वय और निर्णय प्रक्रिया में जटिलताएं पैदा होती हैं। एक समेकित विधेयक इन समस्याओं को दूर कर सकता है, जिससे संचालन में स्पष्टता और दक्षता आएगी।हालांकि, इस प्रस्ताव के साथ कुछ महत्वपूर्ण चिंताएं भी जुड़ी हैं। सबसे बड़ी चिंता बलों के अधिकारों और कर्मियों के कल्याण को लेकर है। (सीएपीएफ)के जवान लंबे समय से बेहतर कार्य-परिस्थितियों, निश्चित कार्य-घंटों, और पेंशन संबंधी मुद्दों को उठाते रहे हैं। यदि यह विधेयक केवल प्रशासनिक केंद्रीकरण तक सीमित रह जाता है और जवानों की वास्तविक समस्याओं को नजरअंदाज करता है, तो इसका उद्देश्य अधूरा रह जाएगा।

इसके अलावा, संघीय ढांचे पर इसके प्रभाव को भी समझना जरूरी है। राज्यों की पुलिस व्यवस्था और ष्ट्रक्कस्न के बीच संतुलन बनाए रखना एक संवेदनशील विषय है। यदि केंद्र के अधिकार अत्यधिक बढ़ते हैं, तो यह राज्यों के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप का कारण बन सकता है, जिससे संघीय संतुलन प्रभावित हो सकता है।

इस विधेयक के सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है कि इसमें पारदर्शिता, जवाबदेही और मानवाधिकारों के संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए। साथ ही, जवानों के मानसिक स्वास्थ्य, परिवार से दूरी, और कठिन परिस्थितियों में काम करने जैसी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए ठोस प्रावधान किए जाएं। केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल विधेयक एक अवसर है—सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने के साथ-साथ उन जवानों के जीवन को बेहतर बनाने का, जो दिन-रात देश की रक्षा में लगे हैं। यह तभी सार्थक होगा, जब सुरक्षा के साथ संवेदनशीलता और शक्ति के साथ संतुलन भी सुनिश्चित किया जाए।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार है, समाचार पत्र व पत्रिकाओं में समसमायिक विषयों पर राजनीतिक चिंतक, विचारक हैं।

उज्जैन में राग मंच संगीत विद्यालय का परचम, फियोना,नव्या,सिद्धि व नमिश अव्वल रहे

महाकालेश्वर सांस्कृतिक महोत्सव 2026 में नृत्य व गायन में शानदार प्रदर्शन, गुरुजनों को भी मिला सम्मान

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर,छत्तीसगढ़।ए सेंटर ऑफ ग्लोबल इंडियन आर्ट एंड कल्चर तथा श्री नृत्यांजलि संस्था द्वारा उज्जैन में आयोजित "महाकालेश्वर सांस्कृतिक महोत्सव 2026" में बिलासपुर के राग मंच संगीत विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कई प्रथम स्थान हासिल कर शहर का नाम रोशन किया।

इस इंटरनेशनल फेस्टिवल एवं प्रतियोगिता में नृत्य, गायन, वादन, रिएक्शन और विजुअल आर्ट जैसी विभिन्न विधाओं में प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विद्यालय के विद्यार्थी संगीत एवं नृत्य शिक्षक शंभूनाथ रजक और साहिल सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में उज्जैन पहुंचे। विद्यार्थियों ने कथक नृत्य और गायन में शानदार प्रतिभा का प्रदर्शन कर निर्णायकों को प्रभावित किया।

विजेता छात्र-छात्राएं

नव्या शर्मा – प्रथम स्थान (कथक सीनियर)
फियोना खान – प्रथम स्थान (कथक सीनियर)

सिद्धि स्वर्णकार – प्रथम स्थान (कथक जूनियर)
डिलेना साहू – द्वितीय स्थान (कथक जूनियर)
अनुषा मरावी – द्वितीय स्थान (कथक ओपन)
नमिश शर्मा – प्रथम स्थान (गायन जूनियर)

गुरुजनों का सम्मान

विद्यालय के शिक्षक साहिल सिंह ठाकुर एवं शंभूनाथ रजक को उनके उत्कृष्ट मार्गदर्शन के लिए "संदीपनी ऋषि गुरु सम्मान" से सम्मानित किया गया।

प्राचार्य का संदेश

विद्यालय के प्राचार्य साहिल सिंह ठाकुर ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए सभी विजेता छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि विद्यालय बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सदैव प्रयासरत है, ताकि विद्यार्थी देश, समाज और विद्यालय का नाम रोशन कर सकें। विद्यालय के समस्त शिक्षकों ने भी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

बिहारशरीफ, नालंदा स्थित शीतला माता मंदिर में हुए हादसे से उभरते सवाल मांग रहे जवाब ?

कमलेश पांडेय

जब दुनियादारी से परेशान व्यक्ति ईश्वरीय आस्था की शरण में जाता है तो उसके बेचैन मन को असीम शांति मिलती है। फलस्वरूप वह नाना प्रकार के रोगों से प्रभावित होते रहने से बच जाता है। वहीं उसकी मनोकामनाएं रूपीं मन्नतें भाव मार्ग द्वारा सम्बन्धित हृदय को प्रभावित करते हुए द्रवित करती हैं जिससे श्रद्धालु के मनोरथ पूरे हो जाते हैं। यही वजह है कि ईश्वरीय आस्था व विश्वास हर धर्म में किसी न किसी रूप में व्याप्त और सर्वव्यापी है।

मौजूदा दौर में धर्म-कर्म को भी मुनाफे का धंधा बना दिया गया है। जहां अमीर मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण कसा हुआ है, वहीं गरीब मंदिरों की व्यवस्था भगवान भरोसे या मंदिर स्वयंसेवक के जरिए संचालित होते हैं। इनमें से कुछ मंदिरों में भारी भीड़ होती है, लेकिन स्थानीय सिविल प्रशासन की अदूरदर्शिता और पुलिस प्रशासन की लापरवाही से जब तब हादसे होते रहते हैं। लिहाजा सुव्यवस्था व सुशासन अक्सर सवालों के घेरे में रहते आये हैं।

ताजा मामला बिहार के अभागे जिला नालंदा का है जहां के मूल निवासी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अस्ताचलगामी राजनीतिक साम्राज्य के लिए शीतला माता मंदिर भगदड़ से उपजी टीस सालों तक लोगों को सालती रहेगी। उनके पास से गृह मंत्रालय क्या गया, उनका गृह जिला भी मानवीय आपदा का शिकार हो गया। उनका मन जरूर अफसोस करता होगा, यदि अपनी मिट्टी से थोड़ा सा भी प्यार बचा रह गया होगा तो !

गौरतलब है कि बिहार के नालंदा जिले के बिहारशरीफ स्थित शीतला माता मंदिर में 31 मार्च 2026 को चैत्र मास के अंतिम मंगलवार को भगदड़ मच गई, जिसमें 8-9 श्रद्धालुओं (ज्यादातर महिलाओं) की मौत हो गई और कई घायल हुए। बताया गया कि यह हादसा भारी भीड़, अपर्याप्त सुरक्षा और प्रबंधन की कमी के कारण हुआ। नीतिगत दृष्टि से यह घटना राज्य की भीड़ प्रबंधन व्यवस्था पर सवाल उठाती है। लिहाजा, स्थानीय पुलिस अधीक्षक ने लोकल थाना प्रभारी को कर्तव्य हीनता के आरोप में निलंबित कर दिया है।

इस गम्भीर हादसे के कारण के तौर पर मंदिर का छोटा होना, बैरिकेडिंग न होना और पुलिस की अनुपस्थिति से हुई धक्कामुक्की आदि बताया गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि महावीर जयंती के संयोग से भीड़ बढ़ गई, लेकिन कोई पूर्व तैयारी नहीं की गई। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की गाइडलाइन का पालन न होने से हादसा हुआ, जो टलने योग्य था।

इस हादसे पर प्रशासनिक प्रतिक्रिया देते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अफसोस जताया और मृतकों के परिजनों को 6 लाख रुपये मुआवजा घोषित किया और अधिकारियों को इसे अविलंब पीड़ितों को प्रदान करने के निर्देश दिए। दीपनगर थानाध्यक्ष को निलंबित किया गया तथा जांच शुरू हुई। क्योंकि विपक्ष ने इसे प्रशासनिक लापरवाही करार दिया।

इस हादसे के नीतिगत निहितार्थ निम्नलिखित हैं- पहला, यह घटना धार्मिक स्थलों पर भीड़ प्रबंधन नीति (SOP) को मजबूत करने की जरूरत बताती है, जैसे अतिरिक्त पुलिस तैनाती और सीसीटीवी बढ़ाना। दूसरा, बिहार में पूर्व हादसों (जैसे पटना 2012-14) के बावजूद दोहराई जाने वाली चूक से केंद्रीय स्तर पर एकरूप नीति की मांग तेज हो सकती है। इसलिए अन्य मंदिरों में सुरक्षा सख्ती इसका प्रत्यक्ष प्रभाव है।

यदि पिछले मंदिर भगदड़ हादसों से तुलना की जाए तो ऐसा करने पर शीतला माता हादसा भीड़ प्रबंधन की पुरानी कमियों को दोहराता दिखता है। बिहार में विशेष रूप से सावन या चैत्र जैसे उत्सवों पर ऐसी घटनाएं बार-बार हो रही हैं।

वहीं, प्रमुख हादसों की तुलना इस प्रकार है:- यदि हादसा, स्थान, तारीख, मौतें, मुख्य कारण और प्रतिक्रिया की बात की जाए तो इससे पूर्व बाबा सिद्धेश्वर मंदिर, जहानाबाद, में 7 अगस्त 2024 को हादसा हुआ जो पुलिस लापरवाही और भारी भीड़ के चलते हुए थी। वहीं, गरीबनाथ मंदिर, मुजफ्फरपुर, में 13 अगस्त 2018 को हुए हादसे में 25 घायल हुए थे। क्योंकि सावन सोमवार पर जलाभिषेक के दौरान धक्कामुक्की हुई थी। वहीं, महाबोधि मंदिर/पटना दशहरा, पटना, में 3 अक्टूबर 2014 को हुए हादसे में 32 से ज्यादा लोग मर गए थे क्योंकि तार गिरने की अफवाह से भगदड़ मची थी। वहीं पड़ोसी राज्य उत्तरप्रदेश में हाथरस सत्संग के दौरान जुलाई 2024 में हादसा हुआ जिसमें 121 लोग मारे गए क्योंकि भगदड़ सत्संग में मची थी। फिर मुख्य आरोपी गिरफ्तार हुए।

उपर्युक्त हादसों से जुड़ीं समानताएं और सबक यह हैं कि सभी मामलों में कारण भारी भीड़, अपर्याप्त सुरक्षा और अफवाहें रहीं। बिहार के हादसे छोटे मंदिरों में ज्यादा, जबकि यूपी जैसे राज्यों में बड़े आयोजनों पर हो ही जाते हैं, इसलिए नीतिगत रूप से SOP, CCTV और पूर्व चेतावनी प्रणाली की कमी उजागर होती है।

आपको यह पता होना चाहिए कि मंदिर भगदड़ रोकने के लिए NDMA दिशानिर्देशों और राज्य SOP का कड़ाई से पालन जरूरी है। ये उपाय पूर्व तैयारी, तकनीक और समन्वय पर आधारित हैं। वहीं पूर्व योजना के तहत भीड़ का अनुमान लगाकर ऑनलाइन पंजीकरण और समयबद्ध प्रवेश लागू करें। मास गेदरिंग प्लान बनाएं जिसमें आयोजक, पुलिस और NGO की भूमिका स्पष्ट हो। मॉक ड्रिल नियमित करें।

जहां तक भीड़ प्रबंधन की बात है तो प्रवेश-निकास द्वार अलग रखें, बैरिकेडिंग लगाएं और चौड़ी राहें सुनिश्चित करें। AI-CCTV, ड्रोन से रीयल-टाइम मॉनिटरिंग करें (6 व्यक्ति/वर्गमीटर पर अलर्ट)। पर्याप्त प्रशिक्षित पुलिस/स्वयंसेवक तैनात करें। वहीं, बुनियादी ढांचा जैसे आपातकालीन द्वार, अग्निशामक यंत्र, पानी/आराम सुविधाएं उपलब्ध रखें। संकेतक चिन्ह, PA सिस्टम से निर्देश दें और पार्किंग रोकें।वहीं, भविष्योन्मुखी कदम उठाते हुए DMA 2005 के तहत जिलों में मास गेदरिंग नीति लागू करें। भक्तों को जागरूकता दें किभीड़ में हाथ छाती से सटाकर खड़े रहें।वहीं, बिहार जैसे राज्यों में धार्मिक उत्सवों पर केंद्रीय फंडिंग से सुरक्षा मजबूत करें।

नालन्दा, हिलसा प्रमंडल अंतर्गत ग्राम लोहण्डा मे जिला परिषद सदस्य ,संजय चन्द्रवंशी जी के पिता जी स्वर्गीय मुनद्रीका चन्द्रवंशी के शोक सभा मे उपस्थीत , झारखण्ड मानव कल्याण सोसाईटी के अध्यक्ष , रामा शीष चौहन और नालन्दा जिला साध संगत, संत निरंकारी समाज के महात्मा ,सुभाष कुमार, डॉ, उपेन्द्र प्रसाद, देबी शरण, मखन लाल, राकेश कुमार, बिकाश कुमार,अजय गुप्ता, प्रभात कुमार अपने सभी सदस्यो के साथ उपस्थीत होकर षुष्प अर्पीत करते हुये। स्वर्गीय मुन्द्रीका जी के जीवनी पर प्रकाश डालते हुये कहा उनका जीवन सदा वंचीत समाज के लोगो के सेबा मे बिता। ओ बिजली विभाग मे कार्यत थे । पुरी ईमान्दारी से आपना काम किये,आज उन्की पुन्य प्रताप से आज उन्का बेटा जिला परिषद बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मै जिला परिषद महोदय से अनुरोध करूंगा की अपने पिता जी के आदर्श पर चले और वंचित समाज के लोगो को सेवा करते हुये आगे बढे।और जिला के बिकास मे अपना योगदान दे कर अपने पिता जी के सपनो को पुरा करने मे अहम भुमिका निभाये।

जे0पी0 जनता दल, देवधर ने किया" मेयर सम्मान-समारोह" का भव्य आयोजन

देवघर।स्थानीय राजाबगीचा स्थित प्रभा कुज भवन में जे० पी० जनता दल के अखिलेश सिंह, दीपक जायसवाल, संजय सिन्हा एवं सुनिता सिंह के अगुवाई मे ₹ मेयर सम्मान समारोह₹ का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नवनिर्वाचित मेयर श्री रवि राउत, डिप्टी मेयर टीप चटर्जी को पौधा, अंग-वस्त्र एवं माला पहनाकर सम्मान किया गया। साथ ही, स्थानीय वार्ड पार्षद मृत्युन्जय राउत, कार्तिक यादव, पार्टी के केंद्रीय राष्ट्रीय सचिव श्याम नन्दन सिंह, समाज सेवी मिथिलेश बाजपेयी को भी अंगवस्त्र पुष्प व माला पहनाकर सम्मान किया गया। मौके पर बक्ताओं ने इस ऐतिहासिक तीर्थनगरी में स्वच्छता व सफाई पर विशेष जोर देने हेतू नवनिर्वाचित मेयर का ध्यान आकृष्ट किया। मेयर श्री रवि राउत जी ने भी लोगो का आभार व्यक्त करते हुए कदम से कदम मिलाकर चलने एवं स्वच्छता का आश्वासन दिया। मौके पर, भारी संख्या में समाज के प्रबुद्ध लोग, महिलाएँ, समाजसेवी एवं नगरवासी मौजूद थे।

होनहार छात्र दक्स पाण्डेय ने बढ़ाया मान: दीप मॉडल स्कूल में किया टॉप, परिवार और समाज में खुशी की लहर

परिवहन विशेष न्यूज

प्रतिभा उम्र की मोहताज नहीं होती, इस बात को सच कर दिखाया है नन्हे मेधावी छात्र दक्स पाण्डेय ने। दक्स पाण्डेय ने अपनी कड़ी मेहनत और असाधारण योग्यता के बल पर दीप मॉडल स्कूल में टॉपर बनकर न केवल अपने विद्यालय का नाम रोशन किया है, बल्कि अपने पूरे परिवार और समाज को गौरवान्वित किया है।

कम उम्र में बड़ी उपलब्धि

बता दें कि दक्स पाण्डेय ने इतनी कम उम्र में अपनी पढ़ाई के प्रति समर्पण दिखाते हुए यह मुकाम हासिल किया है। उनकी इस सफलता पर शिक्षाविदों का कहना है कि दक्स की प्रारंभिक शैक्षणिक उपलब्धियां उनके उज्ज्वल भविष्य का संकेत हैं।

परिवार में हर्ष का माहौल

वही दक्स की इस उपलब्धि से उनके परिवार में जश्न का माहौल है। भाजपा सहयोग मंच के संस्थापक आशुतोष के. शर्मा ने अपने भतीजे की इस सफलता पर खुशी व्यक्त करते हुए इसे गौरव का क्षण बताया है। दक्स के पिता, रवि पाण्डेय, और पूरे परिवार को क्षेत्र के गणमान्य लोगों द्वारा बधाइयां मिल रही हैं।

समाज के लिए प्रेरणा

आपको बताते हुए चलें कि दक्स पाण्डेय की यह सफलता समाज के अन्य बच्चों के लिए भी एक प्रेरणा के रूप में देखी जा रही है। सोशल मीडिया और स्थानीय स्तर पर लोग दक्स की मेहनत की सराहना कर रहे हैं और उनके सफल भविष्य की मंगलकामना कर रहे हैं।

मासूम नन्हे प्यासे परिंदे मिट्टी के प्याले में हम भी इक दरिया भर के रखते हैं।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़

तेज़ धूप का आलम देखो, न साया है न राहत है,
हवाएं गरम हैं कितनी, उफ़ कैसे उड़ते फिरते हैं।
उनके नन्हे पाँव, वो भी कोमल बैचेनी में लगते हैं,
निगाहें पानी को ढूंढती इसी उम्मीदों मे पलते हैं।
असीमित और लाचारी से इनका भरा है जीवन,
प्यारे प्यारे सुंदर सुंदर,इंद्र धनुष से ये लगते हैं।
शिक़्वा, शिक़ायत और फ़रियाद कहां ये करते हैं,
चहचहाहट से आंगन को ख़ुशियों से ये भर देते हैं।
हमारा फर्ज़ कुछ तो होगा जो इनकी मदद करें हम,
मिट्टी के प्याले में हम भी इक दरिया भर के रखते हैं।
एक क़तरा पिएंगे पानी लाख दुआएं तुमको देजाएंगे,
दीवारें, ओर घर तुम्हारे सुकून-ओ-चैन से भर देते हैं।
पक्षियों की प्यास बुझाना इबादत से है बड़ी इबादत,
प्यार मुश्ताक़ सच्चा है तो ये लोट के फिर से आते हैं।

उत्कल का हिस्सा रहा झारखंड का चाईबासा में मना उत्कल दिवस

उत्कल सम्मेलनी , मधुसुदन दास विचार मंच के बेनर तले हुआ यहां आयोजन। तीनों सिंहभूम जिलों मे सैंकडों आयोजन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, कोल्हान कमिश्नरी यानी 1936 के पहले तक ओडिशा का अंग सिंहभूम मुख्यालय चाईबासा में मधुसूदन दास विचार मंच एवं उत्कल सम्मेलन शाखा के संयुक्त तत्वावधान में उत्कल दिवस मनाया गया । जहां भगवान जगन्नाथ तथा उत्कल गौरव मधुसूदन दास के चित्र पर माल्यार्पण किया गया एवं दीप प्रज्वलित कर एक सभा का आयोजन किया गया , जिसकी अध्यक्षता प्रदीप सिंह देव ने की । जहां विभिन्न वक्ताओं द्वारा स्वतंत्र उत्कल प्रदेश गठन के समय एवं उसके बाद की घटनाक्रम पर विस्तर से प्रकाश डाला गया । अध्यक्ष श्री सिंहदेव ने कहा कि इस क्षेत्र कभी उड़ीसा था 1936 के बाद अलग-थलग हो गया फिर यह जो प्रयास है ओड़िया को उनकी भाषा ,साहित्य , संस्कृति को जीवन्त करने का हमारा प्रयास है। आज मधुसूदन विचार मंच जैसे संगठन हमारे साथ हैं कुछ बुद्धिजीवी भाषा को इलाके में बचाने के लिए सैकड़ो साल पहले से तत्पर रहे हैं । उनमें उत्कल गौरव मधुसूदन दास ,पारला खेमूडी के महाराज कृष्ण चंद्र गजपति , मयूरभंज महाराज , उनके प्रयासों को हम आज भी सलाम ठोकते आये हैं । कभी यह उत्कल गंगासे गोदावरी तक विस्तार व समृद्ध देश हुआ करता था , उत्कलीय नौवाणिज्यिक गाथा पर भी उन्होंने प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों में जितने ओड़िया है मधुसूदन विचार मंच के जरिये एक सूत्र में जोड़ा जायेगा ।

लेखक , साहित्यकार विष्णुपद सिंहदेव ने कहा 1936 से आजतक 90 साल हो गये पर इस इलाके में ओडिया भाषा को उसका जगह नहीं मिल पाना बड़ी समस्या है । नाही उनकी उन्नति हुई जैसा की उसे होना चाहिए था । उन्होंने जगन्नाथ संस्कृति एवं ओडिया भाषा की मर्यादा को बनाए रखने हेतु बल दिया ।सचिव पंचानन राउत ने कहा कि इस मधुसूदन दास विचार मंच संगठन को जीवित रखना एवं उसकी कद-काठी को बढ़ाने पर बल दिया।

केरा गांव से आये राजीव सिंहदेव ने महत्वपूर्ण आपबीती बताई । केरा राज परिवार से आए इस शख्स ने बताया कि कभी उनके पूर्वज केरा के सामंत ठाकुर राजा लक्ष्मी नारायण सिंह देव के पास गोपाबंधू दास, गोदावरीश महापात्र भी उनके गांव में आए थे। उनके गांव केरा का विद्यालय लक्ष्मी नारायण सिंह देव ने हीं ओड़िया विद्यालय स्थापना की थी ।आज वहां ओड़िया भाषा नहीं के बराबर है । जब स्वयं वे उसी स्कूल में पढ़ते थे तो वहां पर उड़िया भाषा की पढ़ाई होती थी आज उनकी बेटी को हिंदी में पढ़ाई जाती है । केरा राज परिवार के सदस्य ने झारखंड सरकार पर अपेक्षित सुधार की मांग की। इस दोनो संगठनों के संरक्षक जगत किशोर सामल ने कहा कि यह उत्कल क्षेत्र रहा । भाषा भित्तिक प्रदेश उत्कल बना परन्तु आज किस स्थिति मे उड़िया एवं लोगों की भाषा को लाकर खड़ा कर दिया है यह सोचने वाली बात है । ओडिशा एवं केंद्र से अनेक लोग, बुद्धिजीवी हैं जो यहां आना चाहते हैं । उन्होंने मौके पर उपस्थित जानकारों की तरफ इशारा करते हुए कहा कि इनसे संपर्क रख कर जानने की कोशिश कर रहे हैं अपना सरायकेला कैसा है ।उन्होंने उत्कल गौरव मधुसूदन दास पर बोलते हुए कहा कि महात्मा गांधी उन्हें अपना गुरु समझते थे , अंग्रेज सरकार के अधिकारी उन्हें बड़े बुद्धिजीवी मानते थे । जिनके जरिए स्वतंत्र उत्तर प्रदेश की स्थापना हुई ।आज झारखंड मे इस इलाके को जीवित रखना होगा, मूलवासी को । अपने भाषण में महत्वपूर्ण बात कहते हुए श्री सामल ने बताया देश में संसद है , पार्लामेंट है , सर्वोच्च न्यायालय है पर जरूरत है पीछे से टांग खिंचाई करने वालों से बचकर इलाके को न्याय दिलाना । पत्रकार व ओड़िशा -बिहार -झारखंड की राजनीति में इस मामले के जानकार कार्तिक कुमार परिच्छा ने अठारह बीस मिनट तक इस इलाके का से संबधित इतिहास, घटनाक्रम , दस्तावेज आदि पर कहा ।इसके अलावे अन्य वक्ताओं ने भी अपना अपना मन्तव्यों को रखा । चाईबासा की घूटुसाई की एक धार्मिक महिला मौसी जी की घर में यह आयोजन किया गया ।

भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस को लेकर 'ट्रेड यूनियन सैल पंजाब' की ओर से जन जागृति यात्रा व रोड शो 5 अप्रैल दिन इतवार को

अमृतसर, 2 अप्रैल (साहिल बेरी)

भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस को समर्पित भाजपा ट्रेड यूनियन सैल पंजाब द्वारा लोक जागृति यात्रा के आयोजन की तैयारी को लेकर ट्रेड यूनियन के प्रांतीय कन्वीनर अश्विनी शर्मा की अध्यक्षता में मीटिंग का आयोजन किया गया। पत्रकारों से बातचीत करते अश्विनी शर्मा ने बताया कि पार्टी का स्थापना दिवस हर साल 6 अप्रैल को मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि भाजपा के ट्रेड यूनियन पंजाब द्वारा स्थापना दिवस को समर्पित भाजपा की विचारधारा को लोगो तक पहुंचाने के लिए 5 अप्रैल को लोक जागृति यात्रा का आयोजन किया जा रहा है यह लोक जागृति यात्रा दोपहर 3:00 बजे छेहरटा इंडिया गेट से चलकर ग्वाल मंडी चौक में संपन्न होगी।

उन्होंने बताया कि लोक जागृति यात्रा में रेलमंत्री रवनीत सिंह बिट्टू, पंजाब प्रधान सुनील जाखड़, राज्य कार्यकारी अध्यक्ष अश्विनी शर्मा विशेष तौर पर पहुंच कर कार्यकर्ताओं को संबोधित करेंगे। इस अवसर पर पूर्व पार्षद अरविंद शर्मा, मंडल प्रधान छेहरटा सतीश पुंज, जोगिंदर सिंह अटवाल, रमन पंडित, मोती धमाका, रवि पहलवान आदि उपस्थित थे।

विधायक डॉ गुप्ता ने श्री दरबार साहिब के समीप गलियों का निर्माण, सीवरेज अपग्रेडेशन एवं स्वच्छ पेयजल पाइपलाइन कार्य एक साथ शुरु करवाएं

अमृतसर, 2 अप्रैल (साहिल बेरी)

: केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ अजय गुप्ता द्वारा श्री दरबार साहिब के समीप कटड़ा आहलूवालिया में पड़ती गलियों के विकास तथा क्षेत्रवासियों को आधुनिक नागरिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं की एक साथ शुरुआत की गई। इन परियोजनाओं में गलियों का निर्माण, नई सीवरेज लाइनों का बिछाना तथा स्वच्छ पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु पुरानी पाइपलाइनों को बदलने के कार्य शामिल हैं।

विधायक डॉ गुप्ता ने कहा कि कार्यों के पूर्ण होने के उपरांत क्षेत्रवासियों को साफ-सुथरी गलियां, बेहतर निकासी व्यवस्था तथा स्वच्छ वातावरण की सुविधा प्राप्त होगी, जिससे जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार आएगा। उन्होंने कहा कि लोगों की मांग पर लगातार विकास कार्य करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने कहा कि खराब सीवरेज प्रणाली के कारण उत्पन्न हो रही ओवरफ्लो एवं जाम की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए पुरानी सीवरेज लाइन को बदलकर नई सीवरेज व्यवस्था बिछाने के कार्य की शुरुआत करवाई गई।

विधायक डॉ गुप्ता ने कहा कि केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं का विस्तार करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के चहुंमुखी विकास, स्वच्छता व्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा नागरिकों को बेहतर सुविधाएँ प्रदान करने के लिए वे निरंतर वचनबद्ध हैं और विकास कार्य भविष्य में भी इसी प्रकार जारी रहेंगे। इस अवसर पर पार्षद जरनैल सिंह ढोड, ब्लॉक इंचार्ज अजय नियोल , वेद प्रकाश गुप्ता, एन.पी. सिंह , दीपक चड्ढा , सुधीर कुमार, वनिता अग्रवाल , यूसुफ बिल्ले पा जी, स्थानीय लोग और निगम अधिकारी मौजूद थे।

टेंडर कमीशन के मास्टर पूर्व मंत्री आलमगीर को सुप्रीम कोर्ट ने नहीं दी जमानत

15 मई 2024 से रांची जेल में बंद है झारखंड के ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम और सचिव सचिव लाल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड के पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम और उनके निजी सचिव संजीव लाल को जमानत देने से साफ इनकार कर दिया है. शीर्ष अदालत ने उनकी याचिकाओं को स्वीकार न करते हुए, मामले की सुनवाई में तेजी लाने और चार सप्ताह के भीतर प्रमुख गवाहों के बयान दर्ज करने का कड़ा निर्देश दिया है. न्यायमूर्ति एम.एम. सुंदरेश और न्यायमूर्ति एन. कोटेश्वर सिंह की बेंच ने स्पष्ट किया कि अगली सुनवाई की तिथि गवाहों की जांच प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही तय की जाएगी.

सुनवाई के दौरान आलमगीर आलम के वकील ने दलील दी कि उनकी उम्र 76 वर्ष है और वे मई 2024 से ही न्यायिक हिरासत में हैं. बचाव पक्ष ने तर्क दिया कि ईडी द्वारा बार-बार पूरक आरोप पत्र दाखिल किए जाने से मुकदमे कीप्रगति धीमी हो गई है और अब तकअभियोजन स्वीकृति भी नहीं मिली है. हालांकि, अदालत ने इन दलीलों को पर्याप्त नहीं माना और जमानत देने के बजाय ट्रायल की गति बढ़ाने पर जोर दिया. इसी प्रकार, संजीव लाल की ओर से भी समान राहत की मांग की गई थी, जिसे कोर्ट ने फिलहाल नामंजूर कर दिय ।गौरतलब है कि, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 6 मई 2024 को संजीव लाल और उनके करीबी जहांगीर आलम के ठिकानों पर छापेमारी की थी, जिसमें 32.20 करोड़ रुपये नकद बरामद हुए थे. जांच के दौरान संजीव लाल के पास से 10.05 लाख रुपये और एक ऐसी डायरी मिली थी, जिसमें कथित तौर पर टेंडर कमीशन से जुड़े लेनदेन का पूरा ब्योरा दर्ज था. इसी आधार पर ईडी ने दो दिनों की पूछताछ के बाद, 15 मई 2024 को आलमगीर आलम को गिरफ्तार किया था. अब सुप्रीम कोर्ट के ताजा रुख के बाद इस हाई-प्रोफाइल मनी लॉन्ड्रिंग केस में गवाहों की गवाही और कानूनी शिकंजा और कसने की उम्मीद है.

अटल विश्वास का दीप

यकीन हो तो कोई रास्ता निकलता है,
अंधियारे पथ में भी दीपक संभलता है।

झंझाओं की गोद में काँपती लौ सही,
पर विश्वास का स्पर्श उसे संबल देता है।

हवा की ओट में भी जो दीप जलता है,
वह मन के गूढ़ किसी कोने से पलता है।

निश्छल आस्था की नीरव छाया तले,
हर असंभव स्वप्न भी आकार बदलता है।

जब अंतर में प्राणों का संगीत जागे,
तब मौन भी अपना अर्थ सरल करता है।

वेदना की धार में भी दीप हँसता रहे,
अश्रु बनकर भी उजियारा छलकता है।

टूटती हर आस में एक ज्योति शेष रहे,
वही जीवन को फिर से संवरता है।

विश्वास के पंख लिए उड़े मन अनंत,
हर बाधा के पार नया सवेरा मिलता है॥

— डॉ. प्रियंका सौरभ

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

पंजाब कैमिस्ट्स एसोसिएशन ने दवाइयों की खुली बिक्री पर किया एतराज़: केंद्र पर भड़के

संवेदनशील दवाओं के विज्ञापन का विरोध, 'लोगों की सेहत से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं, संघर्ष की चेतावनी

लोंगोवाल,2 अप्रैल (जगसीर सिंह) - दवाइयों की बिक्री से जुड़े नए प्रस्तावों को लेकर पंजाब कैमिस्ट्स एसोसिएशन ने केंद्र सरकार और ड्रग टैक्निकल एडवाइजरी बोर्ड पर तीखा हमला किया है । केमिस्ट एसोसिएशन के ज़िलाध्यक्ष नरेश जिंदल, महासचिव राजीव जैन ने कहा कि सरकार के ये नए फैसले जहां एक ओर कैमिस्टों के कारोबार को भारी नुक्सान पहुंचाएंगे, वहीं दूसरी तरफ आम जनता की सेहत के लिए भी गंभीर खतरा बन सकते हैं ।सबसे ज्यादा विरोध उन प्रस्तावों का किया जा रहा है, जिनके तहत शैड्यूल एच.एच.-1 व एक्स जैसी संवेदनशील दवाइयों के विज्ञापन की अनुमति देने की बात सामने आई है । एसो. का कहना है कि इससे सैल्फ- मैडिकेशन को बढ़ावा मिलेगा, जो लोगों की सेहत के लिए घातक सिद्ध हो सकता है ।सरकार ने जबरदस्ती की तो कैमिस्ट सड़कों पर उतरेंगे और इसका खामियाजा सरकार को भुगतना पड़ेगा। उन्होंने यह भी मुद्दे उठाए कि गुड डिस्ट्रीब्यूशन प्रैक्टिस को बिना पर्याप्त तैयारी लागू करना छोटे व्यापारियों पर भारी बोझ डालेगा ।नियम 64 में प्रस्तावित संशोधन एम.एस.एम.ई. कैमिस्टों के लिए नई मुश्किलें खड़ी करेगा। इसके अलावा निकोटिन से जुड़े नियमों में ढील से दुरुपयोग बढ़ने की आशंका जताई । उन्होंने स्पष्ट मांग की कि बिना लाइसैंस चल रही फार्मेसीज और ऑनलाइन दवाइयों की बिक्री पर तुरंत रोक लगाई जाए ।यह अवैध कारोबार न केवल सरकार के राजस्व को नुक्सान पहुंचा रहा है, बल्कि मरीजों की जान के साथ भी खिलवाड़ कर रहा है।

पारसीगुटा वडेर में सीरवी महासभा तेलंगाना की आमसभा सम्पन्न, एकता व समाज सुधार पर जोर

जगदीश सीरवी

हैदराबाद: सीरवी महासभा तेलंगाना प्रांत की आमसभा का आयोजन पारसीगुटा वडेर प्रांगण में सफलतापूर्वक किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न वडेरों से पधारे पदाधिकारियों उपस्थिति रहे। संस्था के अध्यक्ष ने सभी अतिथियों एवं पदाधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज की मजबूती आपसी सहयोग और सहभागिता से ही संभव है। आमसभा के दौरान समाज सुधार से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में समाज में एकता बनाए रखने पर विशेष जोर दिया गया। सचिव ने अपने संबोधन में कहा कि संगठित समाज ही प्रगति की दिशा में आगे बढ़ सकता है, इसलिए सभी को मिलकर समाजहित में कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर उपस्थित अखिल भारतीय सीरवी महासभा तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष हरजीराम काग महासचिव सोहनलाल हाम्बड़, कोषाध्यक्ष प्रभुराम, पारसीगुटा पूर्व अध्यक्ष जसाराम सोलंकी, पूर्व सचिव किशनसिंह राठौड़, शमशाबाद बडेर अध्यक्ष आशाराम गेहलोत, कोषाध्यक्ष राजुराम परिहार, शिक्षा कमेटी सचिव भीकाराम काग, हरिराम परिहारिया ,कोरेमुला बडेर अध्यक्ष कालुराम काग, सह सचिव राजाराम गेहलोत, बालाजी नगर बडेर अध्यक्ष जयराम पंवार, पुनाराम बर्फा, मल्लापुर बडेर अध्यक्ष तुलसाराम सीन्दड़ा, आईजी सेवा संघ अध्यक्ष भगाराम मुलेवा, कोषाध्यक्ष बाबूलाल मुलेवा, भंवरलाल मुलेवा, आईजी गौ शाला अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, संगारेड्डी बडेर अध्यक्ष पभुराम, लिकमाराम, चंद्राराम परिहारिया, मण्डिकोडा बडेर अध्यक्ष बाबूलाल भायल, भीकाराम परिहारिया , बाल संस्कार तुपरान संरक्षक देवाराम काग, अखिल भारतीय युवा परिषद् उपाध्यक्ष केसाराम, पूनाराम सीरवी व सदस्य हीरालाल, नारायणलाल व अन्य उपस्थित रहे। अध्यक्ष हरजीराम काग व महासचिव सोहनलाल हाम्बड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पुरी मे होटल मालिक ने टूरिस्ट को पीटा, कर्मचारी पर गर्म दाल गिराई

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

पुरी/भुवनेश्वर: पुरी में टूरिस्ट असुरक्षित हैं। किसी बात पर हुए झगड़े के बाद, होटल मालिक और कर्मचारी ने करीब 3 पुरुष और 2 महिला टूरिस्ट को पीटा। उन्होंने उन पर गर्म खाना, चावल, दाल और सब्जियां भी फेंकीं। उन्होंने महिला और पुरुष दोनों टूरिस्ट को कुर्सियों से पीटा। यह बुरी घटना सिटी रोड पर बेदी हनुमान मंदिर के पास एक होटल में हुई। टूरिस्ट ने अपनी जान बचाई और बीच पुलिस स्टेशन पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की और उल्टा उन्हें धमकाया। चूंकि वे पुरी घूमने आए थे, इसलिए अनजान जगह पर कोई साथ न मिलने पर टूरिस्ट पश्चिम बंगाल लौट गए। पुरी टूरिस्ट पार्क में पुरी का टूरिस्ट ओडिशा आया था और पुरी में पिटाई के बाद वापस लौट गया, ओडिशा की आज निंदा की जाती है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023